आस्था के स्वर

अणुव्रत-अनुशास्ता, आचार्यश्री तुलसी की षष्टिपूर्ति पर

आस्था के स्वर

सम्पादक : डा० श्यामसिंह शशि
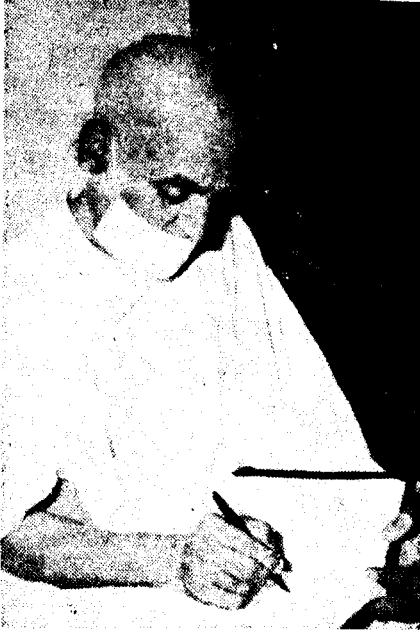
अणुव्रत-अनुशास्ता

आचार्यश्री तुलसी

आमुख

आगम के हिमालय से आचार्य भिक्षु ने साहित्य की गंगा प्रवाहित की। जयाचार्य ने उसे विस्तार दिया और आचार्य कालूगणी ने सुदृढ़ किया तटबंध। अणुव्रत-अनुशास्ता, आचार्यश्री तुलसी आज उसे जन-जन तक पहुंचा रहे हैं।

अणुव्रत की यह भागीरथी इस काव्य-ग्रंथ में अपने स्वाभाविक रूप में प्रवाहित हुई। पुराने हस्ताक्षरो से लेकर एकदम नये हस्ताक्षर तक इसमें सम्मिलित हैं। आचार्यश्री तथा उनके दर्शन के प्रति कविगण ने जो उद्‌गार व्यक्त किये हैं उससे उनकी लेखिनी पवित्र हुई है। सभी कविताओं में आस्था के स्वर मुखरित हो रहे हैं।

सर्वश्री बच्चन, सोहनलाल द्विवेदी, प्रभाकर माचवे, गोपाल प्रसाद व्यास आदि जैसे बहुत से प्रतिष्ठित कवियों के साथ-साथ मुनि श्री नथमल जी, मुनि श्री श्रमण सागर जी तथा मुनि श्री विनय कुमार 'आलोक' की श्रेष्ठ रचनाओं से ग्रंथ की उपयोगिता और भी बढ़ गयी है।

अनुभवी सम्पादक डा० श्यामसिंह शशि ने जिस कुशलता के साथ सुन्दर ढंग से कविताओं का चयन, संकलन तथा सम्पादन किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

—डा० नगेन्द्र

सम्पादकीय

आशीर्वाद से धन्यवाद तक

नौ अक्टूबर की अविस्मरणीय संध्या।

मैं अपने कतिपय पत्रकार तथा लेखक-मित्रों के साथ अणुव्रत विहार पहुंचा।

अणुव्रत-अनुशास्ता, आचार्यश्री तुलसी के प्रथम बार दर्शन किए।

उनके तेजोमय व्यक्तित्व के चुम्बकीय प्रभाव ने अभिभूत कर दिया।

उस दिन हिन्दी तथा राजनीति शास्त्र के जानेमाने विद्वान एवं पत्रकार, मित्रवर डा० वेदप्रताप वैदिक ने अणुव्रत लिया।

'नन्दन' के सम्पादक तथा लब्धप्रतिष्ठित युवालेखक जयप्रकाश भारती ने आचार्यप्रवर से अनेक प्रश्न किए।

राजधानी के युवा पत्रकार सुरेन्द्र मोहन बंसल ने आचार्यश्री से कई विवादास्पद विषयों पर चर्चा की।

कुछ पी. टी. आई. तथा यू. एन. आई. के संवाददाता भी इस रोचक बहस का मजा ले रहे थे।

अणुव्रतप्रवर्तक के अकाट्य तर्कों के समक्ष सभी बुद्धिजीवी नतमस्तक थे।

आध्यात्मिक मौनता के कुछ क्षण······

और तभी एक और महान्मूर्ति से परिचय। मुनिश्री विनय कुमार 'आलोक'— हिन्दी जगत के सुप्रतिष्ठित कवि। एक आकर्षक व्यक्तित्व।

मुनिश्री बोले—

'आचार्यश्री की षष्टिपूर्ति पर एक उच्चस्तरीय काव्यग्रन्थ का सम्पादन करना है। व्रत कौन लेगा ?

प्रकाशन अवधि अत्यल्प। कुछ ही दिनों का समय। भला पूरे देश के कवियों से कैसे रचनाएं उपलब्ध हों ? कौन उठाए इस बीड़े को ! मैंने देखा कि मुनिश्री की दृष्टि मुझ पर पड़ी है ?

और यों इस चुनौती को स्वीकारा था मैंने उस दिन। अनेक पुरानी-नई सभी विधाओं के कवियों को पत्र लिखे। अनुस्मारक भेजे। कुछ यथासम्भव, व्यक्तिगत सम्पर्क भी। अन्ततः काफी-सारी रचनाएं उपलब्ध हो गईं।

रचनाओं में कुछ घटबढ़ की गुस्ताखी करनी पड़ी।

कैसे कहूं कि मैं उन सभी परिचित-अपरिचित मूर्धन्य कवियों का कृतज्ञ हूं जिनका एक-एक रचना-सुमन इस पुष्पमाला का महकता फूल बन गया।

आचार्यश्री के लिए निर्मित यह माला क्या इस बात का प्रतीक नहीं कि इस घोर अनास्था के युग में भी आस्था के स्वर मुखरित हो रहे हैं। इस सृजन में पुराने हस्ताक्षरों से लेकर एकदम नए हस्ताक्षर तक सम्मिलित हैं। न कोई अकारादि क्रम और नहीं वरिष्टता आदि का अनुक्रम। जो कविता जब आई, मुद्रणार्थ भेजदी।

एक ओर समय का नितान्त अभाव, और दूसरी ओर अनुस्मारकों के बावजूद प्रत्युत्तर में शिथिलता या डाक की दुष्कृपा।

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि संत-परम्परा ने ही मार्ग प्रशस्त किया है, कोटि-कोटि दीन दुःखी तथा विपथगामी जनों का। स्वामी विवेकानन्द हों या स्वामी दयानन्द। मुस्लिम संत रज्जब हों या दादूदयाल, सर्वोदय संत आचार्य विनोबा भावे हों या अणुव्रत-अनुशास्ता, आचार्यश्री

तुलसी। आदि-आदि। सभी ने शान्ति, अहिंसा तथा सत्य द्वारा विश्व-कल्याण की कामना की है।

समूची मानवता की रक्षा रहा है—सभी का लक्ष्य।

आचार्य 'तुलसी' और 'अणुव्रत' अब पर्याय बन गए हैं।

उनकी षष्टिपूर्ति पर, यह काव्यग्रन्थ न केवल साहित्यमर्मज्ञ आचार्यश्री का वन्दन-अभिनन्दन मात्र है बल्कि सरस्वतीपुत्रों की कलम की पवित्रता का भी परिचायक है। आस्था के ये स्वर साहित्य की भी बहुमूल्य निधि बनेंगे, ऐसी आशा है।

आचार्यश्री का आशीर्वाद इस कठिन कार्य में मेरा सम्बल बना, यह क्या कुछ कम था। केवल आभार के शब्द पर्याप्त नहीं।

सेवाभावी मुनिश्री चम्पालाल जी, मुनिश्री नथमल जी, मुनिश्री राकेश कुमार तथा मुनिश्री विनय कुमार जी 'आलोक' का जो अनन्य स्नेह मिला वह मेरे लिए संयोग तथा सौभाग्य का विषय था। समिति के अध्यक्ष, माननीय डा० शंकरदयाल शर्मा, संचार-मंत्री, भारत सरकार, उपाध्यक्ष, श्री इन्द्र कुमार गुजराल, मंत्री, सूचना एवं प्रसारण विभाग, भारत सरकार, श्री बच्छराज जी कठौतिया, ब्रजमोहन जी तथा षष्टिपूर्ति समिति के सभी अधिकारीगण इस कार्य में मेरे साथ रहे। आभारी हूं।

श्रीमती शशिप्रभा ने प्रूफरीडिंग तथा अन्य सम्पादकीय कार्यों में हाथ बंटाया, तदर्थ धन्यवाद। आचार्यश्री तुलसी का आशीर्वाद वे पहले ही पा चुकी हैं।

इस ग्रंथ के आमुख-लेखक, हिन्दी जगत् के मनीषी विद्वान, साहित्य-मर्मज्ञ डा० नगेन्द्र के प्रति साभार नमन!

अन्त में, अपने सभी कवि-मित्रों, पत्रकारों एवं जैन तथा जैनेतर समाज के सभी बन्धु-बान्धवों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन एवं अनजानी भूल-के लिए क्षमा याचना।

—श्यामसिंह शशि

अप्पणा सच्च मेसेज्जा

(सत्य को खोजो)

मैं मनुष्य हूँ---आचार्य तुलसी

[संक्षिप्त परिचय]

मंझला कद, गौर वर्ण, विशाल भव्य ललाट, अन्तर्मन तक पैठने वाली तेजस्वी आंखें, प्रलम्ब कान, मुस्कराता सौम्य चेहरा, सीधा-सादा श्वेत परिधान और इन सब में से झांकता हुआ मानव-कल्याण के लिए सतत प्रयत्नशील गंभीर व्यक्तित्व—यह है आचार्यश्री तुलसी का प्रथम दर्शन में होने वाला संक्षिप्त परिचय।

आपका जन्म स्थान लाडनूं—राजस्थान है। पिता का नाम झूमरमल जी और माता का नाम वदनांजी है। परिवार में से एक भाई, एक बहन और स्वयं माता भी दीक्षित हैं।

ग्यारह वर्ष की अवस्था में आप जैन-मुनि बने। बाईस वर्ष की अवस्था में विशाल धर्म-संघ तेरापंथ का नेतृत्व आपको सौंपा गया। चौंतीस वर्ष की अवस्था में राष्ट्र के गिरते हुए नैतिक और चारित्रिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए अणुव्रत-आन्दोलन का प्रवर्तन किया। आज वे उसी उद्देश्य को लेकर हिन्दुस्तान के कोने-कोने में पदयात्रा करते हुए जन-जागरण में जुटे हुए हैं।

तेरापंथ के अष्टम आचार्य पूज्य कालूगणि के पास दीक्षा लेने के पश्चात् आपने अपने आपको गंभीर अध्ययन में लगा दिया। आप एक प्रतिभा-सम्पन्न छात्र थे। ग्यारह वर्ष की स्वल्पतम अवधि में आपने व्याकरण, कोश, तर्कशास्त्र, आगमसिद्धान्त, दर्शन तथा साहित्य आदि का मननपूर्वक अध्ययन किया। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी और राजस्थानी भाषाओं पर अधिकार कर लिया। आपकी तीव्र मेधा का परिचय इस एक छोटे-से उदाहरण से ही प्राप्त किया जा सकता है कि इस स्वल्प अवधि में आपने लगभग बीस हजार पद्य कण्ठस्थ कर लिए और आज भी अधिकांश पद्य आपकी स्मृति से ओझल नहीं हैं। आपकी विलक्षण प्रतिभा ने उस प्राचीन युग के इतिहास की एक बार पुनरावृत्ति कर दी,

जिसमें वेद, त्रिपिटक और आगम-साहित्य कण्ठ-परम्परा के आधार पर शताब्दियों तक स्मृति में अंकित रहते थे।

गंभीर अध्ययन की तरह बचपन से ही अध्यापन कार्य भी आपका प्रिय विषय रहा है। आरम्भिक वर्षों में आवश्यक अध्ययन के बाद ही पूज्य कालूगणि के अनेक विद्यार्थी साधुओं को आपके अध्यापन-संरक्षण में सौंपा था। अपने अतिव्यस्त जीवन में आज भी आप नव-दीक्षित विद्यार्थी साधुओं के लिए जब-तब समय निकाल लेते हैं। अध्यापन-कार्य में निपुणता के कारण केवल आपकी विलक्षण प्रतिभा ही नहीं थी, किन्तु दूसरों को अपनाने की वृत्ति ने भी इसमें पूरा सहयोग दिया। पास में पढ़ने वाले साधुओं के केवल अध्ययन ही नहीं, जीवन-निर्माण की ओर भी आप पूरा-पूरा ध्यान देते। विद्यार्थी-साधुओं की सार-संभाल करना, उनको आचार-कुशल बनाना, कार्य-पटुता सिखाना, रहन-सहन, खान-पान का अध्ययन रखना, उनकी समस्याओं का समुचित समाधान करना, अनुशासन बनाए रखना आदि भी आपके अध्यापन-कार्य के अंग थे। आपकी इसी अध्यापन-निष्ठा ने आज संघ में अनेक साधु-साध्वियों को साधना-कुशल के साथ-साथ साहित्यकार, लेखक दार्शनिक और अनुसंधाताओं के रूप में तैयार कर दिया है।

आपकी इन अप्रतिम विशेषताओं से आकृष्ट होकर पूज्य कालूगणि ने केवल बाईस वर्ष की वय में ही तेरापंथ धर्म-संघ का गुरुतर उत्तरदायित्व आपके नन्हें कंधों पर रख दिया। बाईस वर्ष की उम्र जिसमें सामान्य व्यक्ति विचारों के चौराहे पर खड़े होकर अनिर्णय के चक्रव्यूह में फंसा हुआ होता है और जिस उम्र में यौवन की उद्दाम लहरें जीवन के सागर में भयंकर उथल-पुथल मचाए रहती हैं। उस अपरिपक्व वय में इतने विशाल धर्म-संघ का उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक वहन करने में आप जैसे विमल एवं स्थिर प्रज्ञावाले ऋषि व्यक्ति ही सक्षम हो सकते हैं।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के साथ-साथ आपका सार्वजनिक कार्यक्षेत्र में प्रवेश हुआ। भारत की करोड़ों-करोड़ों जनता के दिल जब आजादी की खुशी से पागल हो रहे थे; हर्षोल्लास के क्षणों में आपने 'असली आजादी अपनाओ' का नारा दिया। आपका विश्वास था कि भारत ने यद्यपि विदेशी दासता के जुए को अपने कन्धों पर से उतार फेंका है, लेकिन

जब तक उसकी मानसिक दासता समाप्त नहीं होती, वह सच्ची स्वतंत्रता का अनुभव नहीं कर सकता।

आपकी मान्यता है कि समस्या चाहे युद्ध की हो अथवा अकाल की, बेकारी की हो या भुखमरी की, शिक्षा की हो अथवा अनुशासन की और राजनीति की हो या अर्थनीति की—सबके मूल में राष्ट्र का गिरता हुआ नैतिक स्तर, चारित्रिक पतन, मानवीय अखण्डता और एकता के दृष्टिकोण का अभाव ही है। जिस राष्ट्र का चरित्र-बल सुदृढ़ होता है, उस पर कोई भी समस्या हावी नहीं हो सकती। इन्हीं सब कारणों से आपने अणुव्रत-आन्दोलन का प्रवर्तन किया। आन्दोलन का प्रथम अधिवेशन चांदनी चौक, दिल्ली में हुआ, जिसकी क्रांतिकारी प्रतिक्रिया भारत में ही नहीं, पश्चिमी देशों में भी बड़े तीव्र रूप में हुई। देश-विदेश के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में अणुव्रत-अनुशास्ता तथा उनके दर्शन के बारे में समाचार प्रकाशित हुए।

अणुव्रत-सन्देश को दूर-दूर तक पहुंचाने के लिए आपने स्वय अनेक लम्बी-लम्बी पद-यात्राएं कीं। एक जैन-मुनि होने के कारण पद-यात्रा आपका जीवन व्रत है। किन्तु भारत के सुदूर अचलों तक होने वाले पैदल-परिभ्रमण का श्रेय अणुव्रत को ही है। अणुव्रत-भारत के प्रचार-प्रसार के लिए न केवल आप स्वयं हिमालय से कन्याकुमारी तक पदयात्रा से जन-जन तक पहुंचे, किन्तु अपने ६५० साधु-साध्वियों के विशाल संघ को भारत के हर प्रांत, नगर और गांव-गांव में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों के जागरण के लिए भेजा। आप अब तक लगभग चालीस हजार मील की पद-यात्रा कर चुके हैं।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद अणुव्रत-आन्दोलन से प्रारम्भ से ही प्रभावित थे। स्वर्गीय पंडित नेहरू से भी आपका मिलना अनेक बार हुआ। पंडितजी का आन्दोलन से काफी लगाव था। वे हृदय से चाहते थे कि जब देश में चारों ओर भ्रष्टाचार और स्वार्थ-पोषण की भावना बढ़ रही है, इस प्रकार के आन्दोलनों का व्यापक प्रचार-प्रसार होना चाहिए। इसी तरह भारत के द्वितीय एवं तृतीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ० राधकृष्णन् तथा डॉ० जाकिर हुसन एव स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का भी अणुव्रत-आन्दोलन के लिए गहरा अनुराग था। इन राष्ट्र-पुरुषों ने न केवल अपना

वैचारिक समर्थन ही आन्दोलन को दिया. किन्तु समय-समय पर अणुव्रत की महत्वपूर्ण गोष्ठियों में सक्रिय भाग भी लिया।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के आचार्यश्री तुलसी तथा अणुव्रत की प्रवृत्तियों के प्रति बहुत आदर के भाव हैं। आचार्यश्री की पद-यात्राओं को सफल बनाने के लिए श्रीमती गांधी का समय-समय पर महत्वपूर्ण योगदान रहा है। न केवल कांग्रेस किन्तु अणुव्रत को भारत के सभी राजनैतिक दलों का पूर्ण समर्थन तथा सहयोग प्राप्त रहा है।

आपकी मान्यता है कि धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, भाषा आदि के आधार पर मानव-मानव में भेद डालना सर्वथा अनुचित है। मनुष्य सबसे पहले मनुष्य है, इसलिए मनुष्यता की दृष्टि से सब एक समान हैं। कोई छोटा-बड़ा नहीं, कोई ऊंच-नीच नहीं। जाति आदि विशेषण उसकी पहचान के लिए गढ़े गए हैं। उन्हें लेकर किसी प्रकार का विवाद उपस्थित करना राष्ट्रीय अखंडता के लिए घातक है ही, धर्म की आत्मा पर भी यह मर्मान्तक प्रहार है। आपसे अनेक बार लोग पूछते हैं, 'आप हिन्दू हैं या मुसलमान ?' आपका एक ही उत्तर होता है, 'मैं मनुष्य हूं, इससे अधिक कुछ भी नहीं।'

—मुनि रूपचन्द्र

समर्पण

शान्ति,
अहिंसा और
सत्य के देवदूत दीन-
दुखियों के त्राता, मानवता
के संस्थापक, विश्व-कल्याण में
संलग्न, अणुव्रत - अनुशास्ता
साहित्य तथा साहित्यकार
के प्रणेता, युगप्रधान
आचार्यश्री तुलसी
को !

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ सं०
१.	दीपक जलते रहो ! —बच्चन	११
२.	मोक्ष स्वयं मानव बन जाए —मुनि-नथ मल	१२
३.	तुलसी की चर्चा यत्र-तत्र-सर्वत्र में —गोपाल प्रसाद व्यास	१४
४.	अभिनन्दन है आज तुम्हारा — क्षेमचन्द्र 'सुमन'	१५
५.	आचार्यश्री के प्रति ! —प्रभाकर माचवे	१७
६.	तुलसी-अष्टक —निर्भय हाथरसी	१९
७.	अणुव्रत-अनुशास्ता — सलेक चन्द 'मधुप'	२१
८.	सादर अभिनन्दन ! —फूल चन्द 'मानव'	२३
९.	अभिनन्दन वन्दन ! — काका हाथरसी	२४
१०.	चिर अभिनन्दन ! —ओमप्रकाश द्रोण	२५
११.	तुलसी आया ले 'चरेवैति' का नव सन्देश। —कीर्तिनारायण मिश्र	२६
१२.	शत बार नमस्कार ! —विद्यावती मिश्र	२८

१३. आचार्यश्री की सवा में
—मैथली शरण गुप्त २६

१४. आचार्यश्री के मार्ग-दर्शन में ··
—ओम प्रकाश गुप्त ३०

१५. जाग्रत भारत का अभिनन्दन !
—नरेन्द्र शर्मा ३२

१६. युग को दी नई दिशा
—बाबूराम पालीवाल ३३

१७. अभिनन्दन गीत !
—श्रीमतबाला मंगल ३४

१८. हे अणुव्रत के आचार्य-प्रवर !
—शशिप्रभा चावला ३६

२६. बहुविधि अगम
—महावीर प्रसाद 'हलवाई' ३८

२०. हे महा प्राण !
—चन्द्रपालसिंह 'चन्द्र' ४०

२१. कविता नहीं कर्म
—कु० आशा शर्मा ४२

२२. षष्टिपूर्ति की वेला पर
—राजेन्द्र मिलन ४४

२३. हे तुलसी ··
—मदन 'विरक्त' ४५

२४. अहिंसा के पयम्बर !
गोपीनाथ अमन ४६

२५. महान इन्सान !
—कालीचरण 'असर देहलवी' ४८

२६. जीवन का स्पन्दन
—चन्दन मल चांद' ४६

२७. तुम्हें राष्ट्र-भर का प्रणाम है !
—विशाल त्रिपाठी ५१

२८. ताज है 'तुलसी'
—रमेश कौशिक ५२

२९. सत्यालोक
—अर्जुन 'भारती' ५४

३०. अणुव्रत-प्रवर्तक की जय !
—अलहड़ बीकानेरी ५५

३१. अणुव्रती को नमन !
—सत्यप्रकाश 'बजरंग' ५६

३२. तुलसी बस 'तुलसी' है !
—सुरेन्द्र ५८

३३. मेरे छन्द अधूरे
—बुधमल शामसुखा ५९

३४. युग प्रधान आचार्य
—कन्हैयाल ल सेठिया ६१

३५. स्थितप्रज्ञ
—दिनेशनंदिनी ६३

३६. मानवता के मूत मसीहा
—श्रमण-सागर ६७

३७. अणुओं से आलोकित
—हरीश भा गनी ६९

३८. तुलसी—देदीप्यमान सूर्य
—मुनि विनय कुमार 'आलोक' ७०

३९. कौन-भगीरथ-सा नभ छाया
—श्यामसिंह 'शशि' ७१

४०. अणुव्रत और युगबोध
—सोहनलाल द्विवेदी ७५

४१. अणुक्रांति
—सुमित्रानन्दन पंत ७८

४२. परिवेश
—डा० गोपाल शर्मा ८१

४३. व्रत समग्र मानव-सेवा का
—चन्द्रदत्त 'इन्दु' ८४

४४. अणु-ज्योति
—रवीन्द्र मिश्र ८६

४५. मुक्ति-बोध
—सत्यमोहन वर्मा ८७

४६. शांतिदूत
—जगदीश चतुर्वेदी ८८

४७. रोशनी के कबूतर
—नारायण लाल परमार ९०

४८. हो प्यार भरा परिवार जहां
—मधुर शास्त्री ९१

४९. कोई दीप नया
—चन्द्र सेन 'विराट' ९३

५०. हम शांति अहिंसा के पूजक
—श्यामलाल 'शर्मा' ९४

५१. समवेत गीत
—राजेन्द्र अनुरागी ९५

५२. अणुव्रत-अणुविस्फोट-सा
—गबरसिंह रावत ९७

५३. आस्था और आस्था
—केदारनाथ कोमल ९८

५४. मैं, यानी मनुष्य
—जीवनप्रकाश जोशी ९९

५५. प्रकृति, अणु और जीवन
—उमाशंकर 'सतीश' १००

५६. मुझ में ही
—इन्दु जैन १०१

५७. अणु-शक्ति
—पुष्पधन्वा १०३

५८. आदमी बनाम आईना
—विनोद शर्मा १०४

५९. स्वयं, यानी प्रश्न और उत्तर
—रामकुमार कृषक' १०६

६०. आज का सूरज
—भवानी प्रसाद मिश्र १०७

६१. अणुव्रत से राष्ट्र निर्माण ?
—डा० शेरजंग गर्ग १११

६२. विकसित असंस्कृति
—प्रेमानन्द चन्दोला ११३

६३. अशुचि
—दिविक रमेश ११५

६४. अगवानी रोशनी की
—विश्वनाथ मिश्र ११७

६५. आत्म-प्रवंचना
—पुरुषोत्तम प्रतीक' ११८

६६. शूल-फूल अणुव्रत अपनाए
—विमला दयाल १२०

६७. चादर बिना धुई
—जगपाल सिंह 'सरोज' १२१

६८. जीवन के सत्य को
—लक्ष्मी त्रिपाठी १२३

६९. रश्मियों पर तम
—रघुवीरशरण 'मित्र' १२५

७०. अजनबी सदर्भो के बीच
—धनंजयसिंह १२७

७१. सहनशक्ति
—गुणमाला नवनखा १२९

७२. सतपथ
—हरिश्चन्द्र पाठक 'अजेय' १३०

७३. एक ही प्रकाश है !
—सत्य प्रकाश प्रखर १३१

७४. सत्यानुभूति
—मल्लिका १३२

७५. सत्य-क्षमा-स्नेह
—राजकुमार सैनी १३३

मानव और यंत्र १३४

अभिनन्दन !

वंदन !!

न मैं जैन हूं और न मैं बौद्ध, न हिन्दू
न मुसलमान। मैं केवल एक मनुष्य हूं;
और कुछ नहीं।

—आचार्यश्री तुलसी

दीपक जलते रहो !

⊙

बच्चन

⊙

दीपक ! जलते रहो !

तुम्हारा पाकर ज्योतिः स्पर्श, हजारों बुझे दीप जल जायें।

जब तक सूरज-चांद-सितारे, चमके ग्रहगण धरती,

दामिनि दमके, और उर्मियां जल में रहें उभरती।

तब तक तपो तपोधन ! जब तक—

तेरे तपः ताप से गल-गल, हिमगिरि नहीं ढल जाये;

रहे गुरुत्वाकर्षण जब तक तेरा यह आकर्षण

अग्नि-पवन, जल-जलधि और जड़-चेतन का संघर्षण।

तुलसी की तुलना तुलसी से

तब तक करता रहूं कि जब तक

षष्टिपूर्ति स्वर शती-पूर्ति के स्वर में नहीं मिल जाये !

मोक्ष स्वयं मानव बन जाए

⊙

मुनि नथमल

⊙

धरती के आलोक आर्य ! तुम,
तुमने यह विश्वास जगाया।
धरती ऊंची स्वर्ग लोक से,
स्वर्ग मात्र धरती की छाया।।

धरती में वह दीप जले जो,
स्वर्ग लोक के दीप्त बना दे।
धरती में वह धार बहे जो,
स्वर्ग लोक को तृप्त बना दे।

धरती से ही स्वर्ग बसा है,
नहीं स्वर्ग धरती पर आये।
स्वर्गों का सर्जन करने—
रती धरती रह पाए।।

वर्तमान भी वस्तु-सत्य, यह
मुख्य तुम्हारा सूत्र रहा है।
बहुत सत्य भगवान आज का,
कल धरती का पुत्र रहा है।।

मानवता के भाष्यकार तुम,
तुमने यह विश्वास जगाया।
परम सत्य मानव दुनियां में,
सत्य मात्र मानव की छाया।।

मानव से ही मोक्ष बसा है,
वही मोक्ष धरती पर आये।
मानवता का महामंत्र ले,
मोक्ष स्वयं मानव बन जाए।।

तुलसी की चर्चा यत्र-तत्र-सर्वत्र में

⊙

गोपाल प्रसाद व्यास

⊙

जन्म के बाद षष्टी मां ने मनाई आई,
लिखते विधाता लेख बड़े अवधान से।
मूड में थी वो भी खूब, लिखा स्वर्ण अक्षरों में,
किया पुनरावलोकन गौरव गुमान से।
उसने लिखा था वो ही किया या और कुछ,
ऊपर उठ गये आप विधि के विधान से।
बनके विधाता आज पुनः साठ साल बाद,
लिखते हम षष्टिलेख सादर सम्मान से।

तुलसी की तुलना मैं तुलसी से करता हूं,
शक्ति त्रिदोष-नाशक, तुलसी के पथ में।
मातृ-स्वरूपा, सहज सौम्य, सुकोमल शान्त,
तुलसी पवित्र मानी जाती पवित्र में।
सारे गुण मिलते है तुलसी के तुलसी में,
वो हैं जड़ और ये हैं महर्षि-सत्र में।
भारत की शान मानवता के गुमान आज,
तुलसी की चर्चा यत्र-तत्र-सर्वत्र में।

अभिनन्दन है आज तुम्हारा !

⊙

क्षेमचन्द्र 'सुमन'

⊙

अणुव्रत के अविचल संवाहक,
तुम आचार्य-प्रवर हो तुलसी ।
जीवन के इस तुमुल कलह में,
तुमको पा भारत-मां हुलसी ॥

इस नैराश्य-निशा में जग ने,
जो प्रकाश तुमसे है पाया ।
वह सचमुच जीवन-दाता है—
दिशि-दिशि में यह गान-समाया ॥

सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह—
का जो व्रत तुमने है साधा ।
प्रेरित हो उस से जीवन की,
भाग गई सारी ही बाधा ॥

भ्रष्टाचार, जमाखोरी के—
दानव को तुमने है नाथा ।
तुमसे आलोकित है मुनिवर,
भारत के गौरव की गाथा ॥

'अनेकान्त' के अनुष्ठान से,
हम सब आनन्दित हो जावें।
ऐसा दो वरदान, कि जिससे,
'वर्धमान' के गुण को गावें ॥

देव! तुम्हारे 'चर्याव्रत' से,
भव्य भाव जनता में जागा।
'महावीर' की गुण-गरिमा से,
सब कल्मष उसने है त्यागा ॥

अमर रहो तुम युगों-युगों तक,
अभिनन्दन है आज तुम्हारा।
तुमसे प्रेरित हैं कवि-कुल के—
मानस की मुक्ता-सी धारा ॥

दो ऐसा आशीष अनूठा,
जीवन में जागृति को भर लें।
चलकर पुण्य तुम्हारे पथ पर,
सफल सभी जीवन को कर लें ॥

आचार्यश्रो के प्रति !

⊙

प्रभाकर माचवे

⊙

नीति तर्कना, नहीं काव्य आधार
काव्य भावना का व्यापार
सदुपदेश अच्छे हैं, उनसे कब परिवर्तन ?
मानव-समाज बदला है देखकर आचरण, वर्तन
बुद्धि ज्ञान अवलंब, कर्म का मूल यहां संकल्प
किंतु हो रही युग में आस्था अल्प
देख रहा हूं कितनी बढ़ती जाती हिंसा, द्वेष
कहां जा रहा अपना देश ?
अपरिग्रह का राग जपें जो वे ही करते संचय
नीतिनाम मुख से, जीवन में अनय-विजय
अत: मुझे विश्वास नहीं अब शब्दों के अपव्यय में
मुझे नहीं निष्ठा अब केवल कागज-मसि अपचय में
यहां एक तोला कथनी-करनी का अभेद वांछित
व्यर्थ यहाँ मन-भर उपदेशों के ढेरों का संचित
क्यों इतनी अनीति बढ़ती है, समाधान है जेता
कहां खो गया नेता ?

अणुव्रत का आन्दोलन अच्छा
मुनिजन व्रत भी सच्चा
पर जिस मिट्टी से ये भवन बनाने बैठे
वे मानव ही अपने 'अहं' जाल में ऐंठे
वही मूलधन कच्चा
आशा करें कि ऐसी ही बूंदों से भरता जाये सागर
इसी भावना से अपनी भी अश्रु-बूंद अर्पित हैं
पूरित हो करुणा की गागर !

तुलसी-अष्टक

⊙

निर्भय हाथरसी

⊙

सजग-नयन, सुकर्ण, मृदु-मुस्कान, गुरू-गम्भीर-वाणी ।
गौर-वर्ण, विशाल-भव्य-ललाट, सात्विक-सरल-प्राणी ।।
राम-नाम-ललाम लेकर कर गये जो कार्य 'तुलसी' ।
कर रहे हैं अब वही अविराम श्री 'आचार्य-तुलसी' ।।

बीज राजस्थान के, वर वृक्ष हिन्दुस्तान के हैं ।
एक-एक अनेक होकर आज पूर्ण जहान के हैं ।।
जैन-मुनि-आचार्य हैं, पर सर्व धर्म सुज्ञान के हैं ।
जाति-धर्म-विमुक्त-पथ, कल्याण हर इन्सान के हैं ।।

वर्ष 'ग्यारह' के हुए तो 'जैन-मुनि' सम्मान पाये ।
वर्ष 'बाइस' के हुए 'आचार्य-पद-स्थान' पाये ।।
वर्ष 'तेतिस' बाद 'अणुव्रत-आन्दोलन' चल पड़ा है ।
एक द्विगुण, त्रिगुण गुणित हो विश्व के सम्मुख खड़ा है ।।

राष्ट्रहितकारी समस्या, शुद्ध मन से भांप ली है ।
दो पदों से ही हजारों मील धरती नांप ली है ।।
देश हो कि विदेश हो, अणुव्रत प्रसारित हो रहा है ।
आत्म चिन्तन हर जगह निस्वार्थ—अंकुर बो रहा है ।।

सर्व-धर्म-समन्वयी, भ्रातृत्व का विश्वास लेकर ।
प्रेम, जग-बन्धुत्व, नैतिक-बल, चरित्र विकास लेकर ।।
साधु-साध्वी-संघ-सहित-सुज्ञान निर्झर बह रहा है ।
'संयमः खलु जीवनम्' मृदु-घोष कण-कण कह रहा है ।।

राष्ट्रपति या सहज-साधारण सभी समकक्ष जाने ।
और जग-कल्याण-हित, नैतिक-सुधार-सुलक्ष माने ।।
धर्म जीवन में रहे तो आप भी सब धर्म के हैं ।
किन्तु द्रष्टा सुदृढ़ सृष्टा एक मानव धर्म के हैं ।।

एक 'तुलसी' थे कि जिनके राम बन-बन में फिरे थे ।
क्योंकि रावण-राज्य में उस राम पर संकट घिरे थे ।।
एक 'तुलसी' हैं कि जो अविराम बन-बन फिर रहे हैं ।
दुर्गुणों के दनुज, पद-यात्री-पदों पर गिर रहे हैं ।।

अणुव्रती के सप्त-सूत्रों में 'समर्पण' भावना हो ।
'संगठन,' 'संचार', 'श्रम', 'सहयोग', 'संयम,' 'साधना हो ।।
आज अणुबम-त्रस्त युग का 'अणुव्रतों' से त्राण होगा ।
आत्म-चिन्तन, चरित्रबल से विश्व का कल्याण होगा ।।

अणुव्रत-अनुशास्ता

⊙

सलेक चन्द 'मधुप'

⊙

राष्ट्रसन्त ! युग की गंगा ! ! बरसाता अमृत-धार चला,
कांटों की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पंथ बुहार चला—
ले, अणुव्रत की पतवार चला।

ऊंचा मस्तक, सौम्य वदन, मुस्काता उज्जवल वेश में,
सात्विकता का अभिनन्दन, बन, उपजा भारत देश में।

आंखों में करुणा का सागर, देखो ठाठें मार रहा,
संसृति की कल्याण-कामना, अणुव्रत के सन्देश में।

संयम की शाश्वत-प्रतिमा, बन पूजा का शृंगार चला।
कांटों की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पंथ बुहार चला ।।

झुरमुट में कोयल का कूजन, होती उपवन की वाणी,
अणुव्रत की धारा से निकली, वह जन-गण-मन की वाणी।

मानवता के लिए, भोर की, ज्योतित किरण खोज लाया,
पर्णकुटी से महलों तक, है गूंज रही तेरी वाणी।

सत्यार्पित हो आज धरा पर, बन सतयुग साकार चला।
कांटों की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पंथ बुहार चला ।।

कठिन कुहासे में प्राची का, दिनमणि बनकर आया है,
दृढ़ कदमों से बढ़कर आगे, ज्योति जगाने आया है।

"युद्ध! धरा पर देश, काल औ' परिस्थिति की परवशता",
विध्वंसों के ताण्डव पर, निर्माण खोजने आया है।

मानवता को भाषा देकर, करने जग उपकार चला।
कांटों की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पंथ बुहार चला ।।

"हिंसा भी पाती है थककर, आखिर शान्ति अहिंसा पर,
मनमयूर नर्तित वीरों के, होते सदा अहिंसा पर।
नहीं वैर से वैरी शांत होता, यह सत्य चिरन्तन है,
तपः पूत ऋषियों की सिद्धि, अर्पित सदा अहिंसा पर।"

शान्ति अहिंसा का अनुगायक, वीणा की झंकार चला।
कांटों की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पंथ बुहार चला ।।

"अन्तर्मन की वृद्धि बिना, बाहरी समृद्धि अधूरी है,
क्षमा-दया सौहार्द-प्रेम से रहित खड्ग कब पूरी है।
जाति-रंग-भाषा धन की, सीमा में मानव तड़प रहा,
नैतिकता से रहित, विश्व की सारी सिद्धि अधूरी है।"

"मनुज-धर्म ही श्रेय प्रेम है", करता हुआ गुहार चला।
"सब हों सुखी, धरा से नभ तक" ले पावन मनुहार चला ।।

सादर अभिनन्दन !

⊙

फूल चन्द 'मानव'

⊙

धर्म मर्म पीड़ित
जन-जीवन में छाया से आये,
ज्ञानोदधि से अमृत के
शुभ हेम-कलश भर लाये।

वितर रहे हो
परम् प्रवचनों के द्वारा जन-जन में,
सन्त जनों के अवलोकन का
भाव जगा इस मन में।

लौह-शृंखला के बन्धन-सी
होती है खल-वाणी,
नूपुर की झंकार सदृश
सुख दातृ है जिनकी वाणी।

अतः एव श्रीचरणों में
मम कर युग का बन्दन है;
धर्म मालिका के सुमेरु हे,
सादर अभिनन्दन है।

अभिनन्दन-वन्दन !

⊙

काका हाथरसी

⊙

तुलसी तुलना करूं, शब्द नहीं है पास,
जन्में राजस्थान में, जग को मिला प्रकाश।

जग को मिला प्रकाश, जैन जन-जन हर्षाया,
लाड़ 'लाडनूं' में वदनां मैया का पाया।

ग्यारह वर्षीय आयु, सभी सुख-सम्पत्ति छोड़ी,
बने जैन मुनि आप, डोर ममता की तोड़ी।

अणुव्रत का, पदयात्रा द्वारा किया प्रसार,
साक्षी इसकी दे रहे, मील पचास हजार।

मील पचास हजार, धन्य आचार्य हमारे,
जीओ उतने हर्ष, गगन में जितने तारे।

कण्ठ करोड़ों मुनि श्री तुलसी के गुण गायें,
देख सफलता अणुव्रत की, अणुबम शरमायें।

चिर अभिनन्दन !

⊙

ओमप्रकाश द्रोण

⊙

अमल विमल नव ज्योति विभाकर,
सार्वभौम हित द्योति दिपाकर।
जन-जन के मन के दूषित वर,
बन्धन सकल अबन्धनमय कर।

अणुव्रत, सत्य, अहिंसात्मक बल,
पा कर हो जन-जन-मन अविचल।
पंकिल जल रत ज्यों नव उत्पल,
किंजलकीरत, ज्यों जग-हृत्थल।

प्रसरित धवल--कमल--वरचन्दन,
पुलकित चपल भ्रमर दल जन-मन।
गुंजित अमल समय जन-कानन,
'चरैवेति' रत वर जन-जीवन।

अरुण राग लांछित मम वन्दन।
स्वीकृत कर वर, चिर अभिनन्दन।

तुलसी आया ले 'चरैवेति' का नव सन्देश।

⊙

कीर्तिनारायण मिश्र

⊙

फैला जब चारों ओर तिमिर का अन्ध जाल ,
अन्याय-अनय-हिंसा का नित दंशन कराल;
शोषण-मर्दन की पीड़ा से जब त्रस्त देश ,
तुलसी आया ले 'चरैवेति' का नव सन्देश ।

इसकी वाणी में नवयुग का नूतन प्रकाश ,
सस्कृति-दर्शन का तेज अमित जीवन-विकास;
आदर्श-समुज्ज्वल शान्त-स्निग्ध-शुचि-सौम्य-रूप ,
गढ़ता विकृतियों में मानव-आकृति अनूप ।

यह तुम्हें न कोई नई बात कहने जाता ,
या तर्क-वितर्कों में न तुम्हें यह उलझाता;
जो भूल चुके तुम मार्ग उसे फिर अपनाओ ,
सात्विक जीवन के तत्वों से परिचय पाओ ।

संयमित बनालो आज कि अपने जीवन को ,
परिग्रह की ओर न ले जाओ अपने मन को;
संकल्प-वरण कर जीवन को पावन कर लो ,
अन्तर ज्योतित करने का व्रत धारण कर लो ।

तुम भूल चुके उस तीर्थंकर का शुभ सन्देश,
जिसकी किरणों से ज्योतित होता था स्वदेश ;
यह आज उसी का गान सुनाने आया है,
जागो-जागो यह तुम्हें जगाने आया है।

तुलसी का 'अणुव्रत' जागृति का अभिनव प्रतीक,
अध्यात्मवाद का परिपोषक, सद्धर्म-लीक ;
दिग्भ्रान्तों का वह करता है पथ-निर्देशन,
सभ्यता-संस्कृति के तत्वों का अनुशीलन।

यह अनाचार की आज रहा दीवार तोड़,
जागरण के लिए नीति-भीति को रहा जोड़ ;
अज्ञान तिमिर को चीर, ज्ञान का भर प्रकाश,
कर रहा आज वह मानव का अन्तर्विकास।

करता न कभी आमर्ष-कलह की एक बात,
या धर्मभेद की इसके सम्मुख क्या बिसात ;
बस एक लक्ष्य इसका—'जीवन मंगलमय हो',
अन्याय-अनय औ कल्मष का क्षण में लय हो'।

हो गये आज तुम हो अतिशय आचरण-भ्रष्ट,
कर रहे आज तुम स्वयं आत्म-बल को विनष्ट ;
अपनी आंखें खोलो, यदि तुम कुछ देख सको,
तो देखो अपने धर्मदूत की ज्योति-रेख।

व्रत करते हैं कुछ लोग स्वार्थ की सिद्धि-हेतु,
व्रत करते हैं कुछ लोग, बनाने स्वर्ग-सेतु ;
लेकिन यह 'अणुव्रत' कैसा जिसमें नहीं स्वार्थ,
निष्काम कर्म यह है नैतिकता प्रचारार्थ।

शत बार नमस्कार !

⊙

विद्यावती मिश्र

⊙

करता है आज युग तुम्हें शत बार नमस्कार !
शत बार नमस्कार !!

भूले हुए पथिक को तुमने राह दिखाई,
फिर ध्येय-प्राप्ति की पुनीत चाह जगाई,
ऐसा लगा कि लक्ष्य धाम ही रहा पुकार !
शत बार नमस्कार !!

तुमने न बहुत ही बड़े आदर्श सजाये,
पारस से छूके लौह भी हैं स्वर्ण बनाये,
भय-शोक-ग्रस्त विश्व को तुमने लिया उबार !
शत बार नमस्कार !!

चाहे जो आये इसमें कोई रोक नहीं है,
ऐसा सुरम्य अन्य कोई लोक नहीं है ;
तम-तोम कहां ज्योति राशि का हुआ प्रसार !
शत बार नमस्कार !!

अचार्यश्री की सेवा में।

⊙

मैथिलीशरण गुप्त

⊙

तनिक से तुलसी-दल का योग ,
हो गया मेरा भोजन भोग !

तुम्हारी वाणी का अणु-दान,
लोक के लिए सुरत्न समान।

(स्वल्प भी सद्धर्मानुष्ठान
महा भय से करता है त्राण।)

धन्य धरती के पूत-सपूत ,
दिपो चिरदिन दिव के-से दूत !

आचार्यश्री के मार्ग-दर्शन में...

⊙

ओम प्रकाश गुप्त

⊙

मित्र,
पुरानी गल्तियों को
अब मत दोहराओ,
भविष्य के ख्याली सपनों में
मत खोओ,
कुछ करना है तो
सोतों को जगाओ,
उन्हें अणुव्रत की
राह पर लाओ
दुनिया के जंग लगे दिलों से
क्रोध
भय
संत्रास
आक्रोश
द्वेष जैसे
विकारों को मिटाओ
नई रोशनी को बिछाओ

आचार्यश्री के मार्ग-दर्शन में सद्भावना,
बन्धुत्व
और प्रेम के पाठ को
विश्व के कोने-कोने में
फैलाओ
जन-जीवन में
शान्ति की
सुरसरी सरसाओ !

जाग्रत भारत का अभिनन्दन !

⊙

नरेन्द्र शर्मा

⊙

अणुविस्फोटों के इस युग में अणुव्रत ही संबल मानव का,
व्रत-निष्ठा के बिना विफल है अनियंत्रित भुजबल मानव का।

संघबद्ध स्वार्थों के तम में अणुव्रत ही प्रत्यूष-किरण-कण,
महाज्योति उतरेगी भू-पर कभी अणुव्रती के ही कारण।

सदा सुभग लघु-लघु सुन्दर की महिमा से ही मंडित है जग,
नापेंगे कल दिग-दिगन्त भी अणुव्रत के कोमल वामनपग।

अणु की लघिमा शक्ति करेगी देशांतर का सहज संचरण,
भूमिकिरण के किरण-वाण से होगा ऊर्ध्व बिन्दु का वेधन।

द्यावा की विराट शोभा ही अणुव्रत की दूर्वा है भू-पर,
दूर्वा का अतिशय लघु तृण ही मुक्ति-नीड़ में सबसे ऊपर।

अणुव्रत के आचार्य प्रवर, जो शील विनय संयम के दानी,
व्यक्ति-व्यक्ति का शुभ्र आचरण बन जाती है जिनकी वाणी।

अणुव्रत के महिमा-गायन में है उन श्री तुलसी का वंदन,
अणुव्रत के अभिनन्दन में है जाग्रत भारत का अभिनन्दन!

युग को दी नई दिशा।

⊙

बाबूराम पालीवाल

⊙

मुनियों के आचार्य, वीर के अनुगत, व्रती विरागी।
मानवता की मूर्ति किन्तु अपने में रहकर त्यागी॥

हे अपरिग्रही! कराते ग्रहण सभी को सद्गुण।
अणुव्रत के प्रकाश से ज्योतित करते हो तुम जन-मन॥

'अणु में है ब्रह्माण्ड' तत्वज्ञाताओं की यह वाणी।
सदाचार की भाव-भूमि पर तुमने ही पहचानी॥

इसीलिये अणुव्रत की भर कर सतत् प्रेरणा मन में।
नैतिकता की प्राण प्रतिष्ठा करते हो जन-जन मे॥

साठ वर्ष के युवा तपस्वी, ज्ञानी युग-निर्माता।
युग को नई दिशा देकर ही बने मनुज के भ्राता॥

हे तुलसी आचार्य, तुम्हारा करता कवि अभिनन्दन।
ग्रहण करो ये भाव-सुमन-अक्षत, रोली औ चन्दन॥

अभिनन्दन गीत !

⊙

श्रोमतवाला मंगल

⊙

हे ! युग सृष्टा, युग द्रष्टा, युग के नूतन पंथ-प्रवर्तक
हे ! विश्व-शान्ति के अग्रदूत, हे नूतन विश्व-प्रदर्शक।

षट् शत करोड़ भयभीत हस्त
भौतिक प्रवाह में पड़े पस्त
तव अभय-पंथ लखते प्रशस्त

कर रहे तुम्हारा वन्द्य, हे, लोक वन्द्य ! तव वन्दन !
तव कोटि-कोटि अभिनन्दन !

तुम अति उदार, उन्नत, विशाल, जाज्वल्यमान शुभदायक
युग के चिंतन-मंथन-दर्शन के तुम प्रकाण्ड विधायक

उद्भव तुम से लख अणु-प्रकीर्ण
हो रहा रुद्ध तिमिरावतीर्ण
झर रहे पत्र सब जीर्ण-शीर्ण

बन रहा इन्द्रवन मरुवन, हे लोक-दीप ! तव वन्दन !
तव कोटि-कोटि अभिनन्दन !

भौतिक सुषुप्ति में लीन लोक नेत्रों के तुम उन्मेषक
अध्यात्म-प्रात के नवल सूर्य, अणुव्रत के तुम अन्वेषक

तुमने उच्चारा दिव्य मन्त्र
हर व्यक्ति धरा का है स्वतन्त्र
है मैत्री-भाव सुशस्त्र-अस्त्र

है तयाज्य आज रण अर्चन, हे लोक देव तव अर्चन !
तव कोटि-कोटि अभिनन्दन !

हे अणुव्रत के आचार्य-प्रवर !

⊙

शशिप्रभा चावला

⊙

हे अणुव्रत के आचार्य-प्रवर,
स्वीकारो मम शत्-शत् वन्दन !
इस पुन्य दिवस पर अभिनन्दन !

तुमने ज्योति दी इस देश को
जो बार-बार
अन्धकार से भर गया था
अहिंसा रो उठी थी
परिवेश क्रूर अनाचार से घिर गया
हम अपने ही घर में
पराये होते गए
हम अपने ही आप से
छले जाते गए
तुम्हारा मन्तव्य यही है न
कि यह देश सारे संसार को
शान्ति से भर देगा
घर-घर को रोशन कर देगा
पर लगता है यह रोशनी

क्षीण से क्षीणतर होती-जाती है
मेरे देश के आकाश पर
हिंसा की कालिमा
चढ़ती जाती है
आचार्य, आज तुम्हारी ओर
सबकी दृष्टि है
सचमुच तुम्हारे अणुव्रत की
सर्वत्र वृष्टि है
जो इस धरती को लहलहायेगी
शान्ति, संयम, संगठन आदि की
फसल उगायेगी !

बहुविधि अगम ।

⊙

महावीरप्रसाद 'हलवाई'

⊙

वंदन

शक्ति का रूप धरो
राग का त्याग, करें चितरंजन
क्षुधित, आर्त, कुछ के बहुव्यंजन
प्रेम, प्यार दो, पतित उधारन !

जन-जन दुःख हरो
शक्ति का रूप धरो ।

अविश्वासमय सर्व-विश्व है
अन्न-वस्त्र से हीन दीन है
धर्म-दान दो, हे मन-भावन !

दोऊ भव मुक्त करो
शक्ति का रूप धरो ।

ऐश्वर्य–समष्टि

सभी धर्मों में समानता है
सभी में महानता है
समानता उनमें भी
"जिन" द्वारा धर्म प्रतिपादित

"सियाराम मय सब जग जानी"
अमर गायक संत तुलसी
सत्य, अहिंसा, अणुव्रत अनुशास्ता
    आचार्यश्री तुलसी ।
"जिन" के एक वरेण्य
अधिमानस ने बताया
असत्य का परिहार, दोष का शमन
सर्व-प्रीतिकर का त्याग ।
एक अबोध बालिका के त्याग की
कहानी एक अजैन की जुबानी
सुन आचार्यश्री अभिभूत हुए
वरेण्य की प्रज्ञा पर मुग्ध हुए।
संत-परंपरायें संतों ही की तरह अमर
पर नित्याचार की चिरन्तन आस्था,
शाश्वत का "वर्द्धमान" आवर्तन,
विज्ञान का अध्यात्म में परिवर्तन,
आचार्यश्री की महती देन
युग-युग, का प्रकाश स्तभं ।
न "केवल" आज न "केवल" कल
चैतन्य सृष्टि का चिर कोलाहल
सत्य की साकार-अनावधि
स्वरूप में सावधि स्थिति ।

हे महाप्राण !

⊙

चन्द्रपालसिंह 'चन्द्र'

⊙

हे महामान्य !

नमन है, जन-गण-मन के मान्य !
नमन है, अणुव्रत के धन-धान्य !
नमन, सारल्य-सत्व सम्मान्य !
नमन, हे पूज्य--पूत--प्राधान्य! !

हे महाप्राण !

प्राण के धर्म, धर्म के प्राण !
त्राण के भीत, भीत के त्राण !
अघौघहेतु अमोघ खर वाण !
व्यथित मानवता के कल्याण! !

हे तपःश्वास !

आपने हे शुचि तपः विश्वास !
जगाया जन-जन में विश्वास--
'बिना-विष पीने के अभ्यास
व्यर्थ है शिव बनने की आस! !

हे युग-सत्य !

मनुज यह भौतिकता का भृत्य ।
कर रहा व्यामोहित--सा नृत्य ।
प्राप्त कर पावन-पथ अनुसृत्य ,
आपसे ही होगा कृत--कृत्य ।

हे निर्दोष !

आपका यह अणुव्रत उद्घोष ,
शान्ति--सुख का है अनुपम कोष ;
हरेगा प्रमथा व्यथा--प्रदोष ;
भरेगा जन--जीवन में तोष ।

आपका अभिनन्दन !

मुक्ति उद्गाता, अभिनन्दन !
मुक्ति-फल दाता, अभिनन्दन !!
मुक्ति के ज्ञाता, अभिनन्दन !!!
सुयुग--निर्माता, अभिनन्दन !!!!

कविता नहीं कर्म !

⊙

कु० आशा शर्मा

⊙

धीरे--धीरे
सब कुछ छोड़
एक दिया ले नन्हें हाथों
अंधकार भरे पथरीले पथ पर
तुम्हारा बढ़ते चले जाना......
सौम्य स्वप्न लगता है,
सहज सच्चाई नहीं ।

○ ○ ○ ○

बरसों पहले—
थोथे आदर्शों से जुड़े
भटके हुए
दोराहो पर अटके हुए
कितने--ही लोग
मंदिर और मस्जिद की सीमाओं तले
मानव की हत्या कर चुके हैं ।

○ ○ ○ ○

बिखरती हुई संस्कृति
भटकती हुई आस्थाएं
कोहरे से घिरे सब
एक दिन लौट आयेंगे,
अमन और अहिंसा की लौ लिए
किसी सुःखद सुबह का साक्षी
तुम्हारा व्यक्तित्व -
कविता नहीं कर्म चाहता है ।

षष्टिपूर्ति की वेला पर

⊙

राजेन्द्र मिलन

⊙

सत्यता की तेजस्वी तमक
संयम की ओजस्वी दमक
और अहिंसा की अपराजिता प्रेमस्वी चमक
नैतिकता के अपरिमित वंदन-वारों में
प्रस्तावित चारित्रिक आभास
जीवन-उपवन में उच्छवासित प्रेरक गंधित वातास ।

अणुव्रत के आचार्य प्रवर श्री तुलसी का मानव
जीवन-आयोजन
सचमुच ही निर्देशित करता
शांति-सुख-गरिमा से पूरित भव-सम्मोहन ।

अंधियारे के विशद पटल पर छहरायेगा ज्योतिर्मय
चिर महा प्रकाश
षष्टिपूर्ति की वेला पर
स्वीकारो जन-जन का अभिनन्दन
हे अणुव्रत के चिंतक-पदयात्री
मानवता के कल्याणी आकाश !

हे तुलसी...

⊙

मदन 'विरक्त'

⊙

हे तुलसी, तुमने जगती को नव-जीवन साकार दे दिया।
धन्य हुई भारत की धरती जिसको तुमने प्यार दे दिया॥

तुम सुखदायक मंगलकारक
बन कर आये युग-निर्माता।
विश्व-प्रेम बन्धुत्व भाव से
कहलाये सच्चे सुख दाता॥

तुमने तप-साधन संयम का, मानव को उपहार दे दिया।

उर-उपवन में सत्य अहिंसा
के नित तुमने सुमन खिलाये।
भूले भटके पतित जनों के
आकर तुमने कष्ट मिटाये॥

नश्वर को अविनाशी तुमने मोक्ष प्राप्ति का द्वार दे दिया॥

अमर रहेगी वह वसुन्धरा
जिसने तुम को जन्म दिया है।
कोटि-कोटि वंदन उस माँ को
जिसका तुमने दूध पिया है॥

युग-युग अमर रहेगा वह क्षण जब तुमने अवतार ले लिया।
हे तुलसी, तुमने मानव को जग-जीवन का सार दे दिया॥

अहिंसा के पयम्बर !

⊙

गोपीनाथ ग्रमन

⊙

आचार्य तुलसी की फ़ज़ीलत[1] मुझसे क्या होगी बयां ।
वह हैं अहिंसा के पयम्बर[2] सिद्क़[3] के हैं तर्जुमां[4] ।।

इस दौरे पुरआशोब[5] में जब है अंधेरा हर तरफ़ ।
है इक मिनारा रोशनी[6] का ज़ात उनकी बेगुमां[7] ।।

जादू है हर तहरीर[8] में इक सेहर[9] हर तक़रीर[10] में ।
लेती है आवाज़ उनकी दिल में अहले दिल[11] के चुटकियां ।।

इनकी ज़ुबां में और दिल में फ़ासला कोई नहीं ।
जो दिल में होता है अदा कर देती है उनकी ज़बां ।।

उनको अदावत[12] कुछ नहीं कोई उदू[13] भी हो तो हो ।
दिल है इक ऐसा आईना जिस पर नहीं हैं छाइया ।।

पहुंचे वह पैदल चलके भारत देश के हर गोशे[14] में ।
उनके अमल[15] के कूअतें[16] सब हैं अक़ीदो[17] से अयां[18] ।।

ग्यारह बरस की उम्र में साधु हुये आचार्य जी ।
इस दौरे तिफ़्ली[19] में किसी को हो शिऊर[20] इतना कहाँ ।।

---

१. महानता । २. संदेशवाहक । ३. सत्य । ४. प्रवक्ता । ५. कष्टों का युग । ६. प्रकाश स्तम्भ । ७. निस्संदेह । ८. लेखन । ९. जादू । १०. भाषण । ११. दिलवाले । १२. वैमनस्य । १३. शत्रु । १४. कोने । १५. कार्य । १६. शक्ति । १७. विश्वास । १८. स्पष्ट ।

बाईस बरसों के थे वह आचार्य जी जब बन गये ।
इतनी फ़ज़ीलत मिल गई उनको हुये जब नौजवां ॥

आचार्य भिक्षु ने चलाया था जो तेरा पंथ को ।
क्या है ठिकाना किस क़दर पेश आई थीं कठिनाईयां ॥

लेकिन वह बर्दाश्त कीं पेश आईं जितनी मुश्किलें ।
सहकर हज़ारों सख्तियां आख़िर हुये वह कामरां[21] ॥

कुर्बानियों का जबसे अब तक सिलसिला चलता रहा ।
हर चश्मे बातिनकी[22] पहै वह सिलसिला अब तक अयां ॥

यह जितने साधु और सतियां उनके पैरोकार[23] हैं ।
हर एक के जीवन में पेश आती है अक्सर सख्तियां ॥

बर्दाश्त कर लेते हैं लेकिन खन्दांपेशानी[24] से सब ।
है आत्मा की शक्ति उनके इस तहमुल[25] में निहां[26] ॥

अब साठवीं जो वर्षगांठ इनकी मनाई जाती है ।
हर अहले दिल का दिल है खुश, मसरूर[27] है हर नुक्ता दां[28] ॥

है यह दुआ अब तक गुज़ारे आपने जितने बरस ।
इतने दिनों तक और भी होते रहें वह ज़ौ फ़िशां[29] ॥

बदले फ़िज़ाऐ[30] हिन्द सारी आपके उपदेश से ।
आये नज़र हर सिम्त अहिंसा और सचाई का समां ॥

---

१६. बाल्यकाल । २०. चेतना । २१. विजयी, सफल । २२. अन्तर्दृष्टि रखने वाले । २३. शिष्य, पीछे चलने वाले । २४. हंसी-खुशी से । २५. सहन करने की शक्ति । २६. छिपी हुई । २७. प्रसन्न । २८. ज्ञानवान । २६. प्रकाश फैलाने वाले । ३०. वातावरण ।

महान इन्सान!

⊙

कालीचरण 'असर देहलवी'

⊙

बड़े ज्ञानी बड़े विद्वान हैं आचार्य तुलसी।
यह कहिये एक महान् इंसान हैं आचार्य तुलसी॥

अमारत क्या है? उनके फ़क़ की अदना सी लौंडी है।
बज़ाहिर वे सरोसामान हैं आचार्य तुलसी॥

अहिंसा के पुजारी है, मुहब्बत के भिकारी हैं।
इक अपने नाम के इंसान हैं आचार्य तुलसी॥

हजारों मील तक पैदल सफ़र करने की हिम्मत है।
कहूं क्या किस कदर बलवान हैं आचार्य तुलसी॥

हविस ज़र की न सौदा है नमूदो शानो शौकत का।
निराली शान के इंसान हैं आचार्य तुलसी॥

करेगी नाज़ जिनके नाम पर तारीख इन्सां की।
जो सच पूछो तो वह इन्सान है आचार्य तुलसी॥

हमारी किश्तीऐ उम्मीद के अब आप हाफ़िज़ हैं।
बपा तूफ़ान पर तूफ़ान है आचार्य तुलसी॥

करेंगे आप ही पूरा उन्हें अपने तद्दबुर से।
हमारे दिल मे जो अरमान हैं आचार्य तुलसी॥

बबातिन इक फरिश्ता हैं सरासर चश्मे बीना में।
बज़ाहिर ऐ 'असर' इसान हैं आचार्य तुलसी॥

जीवन का स्पन्दन

⊙

चन्दनमल 'चांद'

⊙

कोटि-कोटि पुत्रों की माता विकल हुई,
अवनि ने करवट ली, दुनिया डोली,
सुख-दुःख के साथी
मन के मीत
चितेरे नभ से
भींगी पलकों वाली वसुधा बोली,
मुझ दुखियारी माता की फरियाद सुनो
फिर राम, कृष्ण, गौतम को
मेरे आंचल में डालो,
कोटि-कोटि मनु बिलख रहे ज्वाला में
उन पर अमृत की वर्षा कर डालो।

आकाश हुआ स्तब्ध,
वेदना घनीभूत होकर छाई
धरती की व्याकुलता से
अम्बर की आंखें भर आई।

विद्युत चमक उठी, घन घहराया
पुलक उठी धरती, जन-जन का जियरा सरसाया,
रिमझिम पावस की बूंदों से

वसुधा मोद मनाकर हुलसी,
गोद पूर्ण, आंचल में खेल उठा
अम्बर का बेटा, जन-नायक तुलसी।
तुलसी रामायण का गायक है,
तुलसी जन-मन का नायक है,
तुलसी ने संघर्षों से प्यार किया,
पथ के शूलों को, फूलों का उपहार दिया।
तुलसी 'मानस' का अमर राग,
तुलसी पुष्पों का मधु पराग,
तुलसी है युग का नव विहाग,
जिसने जग को अनुराग दिया
कुछ भाव 'पुष्प'
कुछ आत्म बोध
सुख और अधिक आल्हाद दिया।
तुलसी एक विरवा है,
तुलसी एक पौधा है,
तुलसी मानवता का योद्धा है,
तुलसी एक औषधि है
जिसने मानवता को त्राण दिया
नवजीवन, नवउच्छ्वास
नई गति, नव उल्लास, नया ही प्राण दिया।
तुलसी के अक्षर तीन,
शब्द है एक
तुलसी के रूप तीन,
गुण हैं अनेक
तुलसी मेरे जीवन का स्पन्दन है
तुलसी को मेरा अभिनन्दन है।

तुम्हें राष्ट्रभर का प्रणाम है !

⊙

विशाल त्रिपाठी

⊙

तुम्हें राष्ट्र भर का प्रणाम है, मानवता के नेता !

मिटा कभी तूफान, चल पड़ीं फिर से बही हवाएं,
अपनी गति-विधि खो बैठी हैं, बड़ी-बड़ी नौकाएं।
उमड़ रही जल-राशि तिमिर में, छूट गई पतवारें,
हुई विलीन दृष्टि से नभ की वे नीली दीवारें ॥
नाविक देख रहे हैं तुमको, तुम बड़वाग्नि-प्रणेता !

राह भ्रमित मानव ने अब तक, पथ की राह न पाई,
नहीं दूर हो सकी आज तक युग की बड़ी लड़ाई।
अंधकार की निर्मम माया, पल-पल बढ़ती जाती,
उधर प्रतीची के कोने में, नई घटा घहराती ॥
तुम प्राची की प्रथम किरण हो तुम हो तिमिर-विजेता !

आज मनुजता विकल रो रही, दानवता के आगे,
मूक, भीत वाणी में तुमसे, भीख त्राण की मांगे।
अणुव्रत का ध्वज फहरायेगा, मानवता के दानी,
सदा तुम्हारा ऋणी रहेगा, विकल विश्व का प्राणी ॥
संकल्पों के सप्तसूत्र तुम हो नवयुग के नेता !

ताज है 'तुलसी'

⊙

रमेश कौशिक

⊙

सदियों पहले
जब नहीं कहीं थीं क्रेने ट्रक
इन किलों, मकबरों
मन्दिर, मस्जिद, मीनारों के लिए
भला ढोया होगा
किसने पत्थर
मकरानों से

इंसानों से लेकर
गधे ऊंट खच्चर बैलों औ' हाथी तक
आखिर कोई तो होगा ही

किन्तु कहीं भी
इस दुनियां में
बोझा ढोने वाले पशु की
या मनु की
मूर्ति उकेरी गयी नहीं हैं
दिलवाड़ा का मन्दिर
बस अपवाद रहा है

दूर खदानों से लेकर
अर्बुद पर्वत के दुर्गम शिखरों तक
जिन गजराजों ने
था मन्दिर का मरमर ढोया
तीर्थंकर के साथ प्रतिष्ठित
मूर्ति वहाँ पर है
उन सब की

एक बना था
ताजमहल
जहां
बांह काट दी थी शिल्पी की
और इसी क्रम में
एक और मन्दिर बन रहा है—
अणुव्रत का
जिसका ताज है 'तुलसी'
तथा सैकड़ों ताज और दिलवाड़े
न्योछावर हैं उस पर !

सत्यालोक

⊙

अर्जुन 'भारती'

⊙

तुलसी,
तुम्हारा नाम अब
'अणुव्रत' का पर्याय हो गया है
तुम विश्व के लिए
नई किरण लाये हो
जिसके प्रकाश में
धरती का
दु:खी
दलित
और त्रस्त
मानव
नये पथ का निर्माण कर रहा है
सत्य का संधान कर रहा है !

अणुव्रत-प्रवर्तक की जय !

⊙

अल्हड़ बीकानेरी

⊙

हिंसा-पथ से डरें, अहिंसा-पथ से प्यार करें,
आओ अणुव्रत-प्रवर्तक की जय-जयकार करें।

हुआ धर्म का ह्रास, पाप धरती पर पनप रहा,
देख-देख दुर्दशा, हृदय मानव का कलप रहा।
विश्व-युद्ध क्यों हुये, शांति का किसने चीर हरा ?
क्यों मानव के रक्त कणों से रंजित हुई धरा ?

दोषी हैं हम स्वयं भूल अपनी स्वीकार करें !

ऐसा जीवन जियें, घृणा का जिसमें नाम न हो,
राग, द्वेष, छल कपट आदि का कोई काम न हो,

सत्य, अहिंसा और शांति का प्रबल प्रचार करें।

अणुव्रती को नमन !

⊙

सत्यप्रकाश 'बजरंग'

⊙

जीवन एक गीत है जिसको धरती अम्बर सब गाते हैं।
नीड़ वृक्ष पर, पवन पंख पर गाकर सभी हर्ष पाते हैं।।

जो न अहिंसा का विश्वासी, मैं कहता वह जीवन-द्रोही।
कहता जो दहकाओ ज्वाला, वह अशांति का प्रथम बटोही।।

जिनका मन जड़ता की प्रतिमा वह मौसम को दुहराते हैं।
आग लगी मधु भरे चमन में बजा ढोल कुछ बहकाते हैं।।

ओ ज्वाला से तपते प्राणी, इस जीवन को सत्य वचन दो।
पाओगे शीतलता उर में, निर्माणों को नये नयन दो।।

गीत न गाती यदि यह रजनी कभी न उगती पुण्य प्रभाती।
गीत न गाते यदि ये तारे कभी चांदनी रात न आती।।

दिनकर के प्रकाश गीतों को अगणित कमल-हृदय गाते हैं।
रण-स्थल के वाद्य-यन्त्र पर योद्धा विजय-गीत गाते हैं।।

गातीं गीत सिन्धु की लहरें, अणुव्रती को विनत नमन में।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान के सभी तत्व जिनके जीवन में ॥

खेद है कि इस भूमंडल पर दीखे धुंधला शांति सितारा।
राष्ट्रदेश के सब प्यारे हैं कोई नहीं विश्व का प्यारा ॥

तजकर गीत विश्व समता के स्वार्थ सिद्धि गाये जाते हैं।
जीवन एक गीत है जिसको धरती अम्बर सब गाते हैं ॥

तुलसी बस 'तुलसी' है !

⊙

सुरेन्द्र

⊙

इस महान देश का शरीर
अनेक व्याधियों से ग्रस्त है
रूढ़ियों की गठिया से त्रस्त है
शोषण की तपेदिक
जातिवाद का कैंसर
साम्प्रादायिकता का टिटेनस
भ्रष्टाचार का सिरदर्द
अनाचार का अस्थमा
समाज के शरीर को
जर्जर कर रहा है
तब कौन बचाये इन व्याधियों से ?
अनेक प्रश्न उठते हैं
और स्वत: उत्तर कुछ मिलते हैं—
अणुव्रत के उद्यान में
एक तुलसी का बिरा है
समाज की समस्त व्याधियों के
उपचारार्थ जन्मा है
तुलसी—बस 'तुलसी' है !

मेरे छंद अधूरे

⊙

बुधमल शामसुखा

⊙

नहीं करूंगा नमन तुम्हारा अन्तर्यामी
मेरे पापों की बदनामी हो जायेगी।

वन-वन फिरने वाले मन के नाभि-मृग का
इस धरती पर कोई कहीं निदान नहीं है।
अपना तप बल व्यर्थ गंवाओं मत वैरागी
उसे बचाने वाला वेद विधान नही है।
मेरी भाग्य-लिपि के अक्षर नहीं मिटेंगे
डर लगता है तुमको हत्या लग जायेगी।

नहीं करूंगा नमन तुम्हारा अन्तर्यामी
मेरे पापो की बदनामी हो जायेगी।

छूकर चांद मिली है मुझको केवल माटी
महाशून्य का और घना विस्तार हो गया।
हाय ! विभाकर के घर से तम लेकर आये
पथ में लगता है मन का विज्ञान खो गया।
परस अपावन मेरे तन का वन्दन लेकर
तेरी पावनता भी दूषित हो जायेगी।

नहीं करूंगा नमन तुम्हारा अन्तर्यामी
मेरे पापों की बदनामी हो जायेगी।

तेरे इन रीते हाथों से मेरे भिक्षु
अगर लिया वरदान साधना शरमायेगी।

मेरे छन्द अधूरे मेरे टूटे सपनों का
लेकर उपहार वासना बढ़ जायेगी।

कालकूट मत मांगो मुझ से अमृतपायी
कहीं तुम्हारी कंचन काया जल जायेगी।

नहीं करूंगा नमन तुम्हारा अन्तर्यामी
मेरे पापों की बदनामी हो जायेगी।

युगप्रधान आचार्य

⊙

कन्हैयालाल सेठिया

⊙

स्नेह भरे पर तिमिर घिरे
इस बुझे-बुझे से युग-प्रदीप को
तुमने दी चिनगारी !

पन्थ हुआ आलोकित, बदली
गहन अमा पूनम में,
किया लक्ष्य की ओर नियोजित
गति को बांध नियम में,

परस करुण-कर सत्-शिव-सुन्दर
बनी हृदय की—सुप्त वेदना
कजरारी रतनारी।

दृष्टि हुई आश्वस्त, रश्मियाँ—
खुल खेलीं-त्रिभुवन में,
मिली-आत्म अनुभूति, लहर-सी—
जागी जीवन-जन में,

अभिमन्त्रित कर दिया मंत्र वर
'पी संयम की सुधा बनेगा
प्रभु-पद का अधिकारी।'

मर्त्य स्वयं ही मृत्युंजय है
जागा सपन नयन में,
परम सत्य यह महामुक्ति की
कुंजी है बन्धन में,

लघुतम क्षण में गूंज गगन में
गई प्राण की पावन श्रद्धा—
तुलसी की बलिहारी !

स्थितप्रज्ञ

⊙

दिनेशनंदिनी

⊙

आठ के पहले दुनिया
अंधेरी और रात उदास थी
साठ में आते-आते
ज्ञान के प्रकाश से
दुनिया जगमगाई
रात बदल गई
प्रभात में;
ये
साठ वर्ष
दया, ज्ञान, सत्य, अहिंसा
शोध-प्रतिशोध
के साथ-साथ
जीये—
परिस्थितियों के तनाव
अनेकान्त में एकान्त
विभिन्नता में अभिन्नत्व
का सफल प्रयोग;
अब भी कोई प्रश्न

शेष है क्या ?
शान्ति, धृति, कीर्ति
निष्ठा, स्पृहा,
ज्ञातव्य अवशेष है क्या ?
किसी ने कहा कि
तुम सम्पूर्ण
तल, वितल और तलातल हो
यह सब दृष्टि-गत है—
पर यह भी एक स्थिति है
कि तुम अगोचर हो
अनहद, आनन्द हो
कैवल्य की जलधाराओं
से स्नात निसर्ग
में उगे निर्जन
निर्विकार बाहुओं में
सुखों को समेटे
स्वयं निरानन्द हो !

यह एक सुखद संयोग
कि मैंने तुम्हें देखा है ।
तुम्हारे लम्बे अतीत को
विश्व के आंचल पर
फैलाया है

शायद मैं भ्रमित हूं
कि तुम मुझे नहीं जानते,
निराकार, मृत्यु, छाया
आयाम की मजबूरियां
नहीं पहचानते

महत् के लिये
यह ज्ञान जरूरी नहीं;

तुम मुझ में हो
चाहे मैं तुम्हारे भीतर
कभी आई नहीं हूं

पथ दुर्निवार है
सांझ ढल रही है—
संसृति उदास है—
यह प्यार की उदासी
मैं चुपचाप देखती हूं
तुम्हारी कीर्ति का
विशद-घिराव,

तुम्हारा बाहु-बल
तुम्हारी हिमाचल-सी
स्थित-प्रज्ञ अवस्थिति;
तुम साठ के रहो
अथवा आठ के;
यह वर्ष प्रकाश के
अक्षर हैं—
चेतना के विस्तार में,

रूपाकार के हाथ
इन्हें थाम लक-तक
यथार्थ के नक्शे
बना रहा है
पापों की तह को
चीरता हुआ
शमशीर की धार-सा

तुम्हारा आकार
अस्ति और भाति
काल और जिज्ञासा
मृत्यु और निःशेष के
प्राणों पर
अमृत्व के बीज बोता है—
तुम सौ वर्ष जीओगे
सहस्त्र वर्ष रहोगे
क्योंकि तुम अन्त नहीं
आदि हो
तुम खोते नहीं,
होते हो !

मानवता के मूर्त मसीहा

⊙

श्रमण-सागर

⊙

मत देव कहो
इनको तुम मत भगवान् कहो
ये देव नहीं
भगवान् नहीं
यदि कहना ही कुछ चाहते हो तो
इतना-सा तुम कह दो

ये हैं
मानवता के मूर्त मसीहा
बस इसीलिए शत्-शत् अभिनन्दन्
कोटि-कोटि जन श्रद्धा वन्दन्
अणुव्रत का नैतिक शख-नाद
ले धम समन्वय का निनाद
सवाद तुम्हारा सानुवाद
जन-जन तक पहुंचा निर्विवाद
तज वाद-विवाद विषादाल्हाद
क्या-क्या भूलूं क्या करूं याद
उप क्रांतिया तेरी महा प्रसाद ?

बन अप्रमाद
अव्यय अबाध अतिशय अगाध
लो लाख-लाख जन-साधुवाद

अमृत घटा षष्टि-पूर्ति पुलकन्
बस इसीलिए शत्-शत् वन्दन् !

मां वंदना के पावन-पराग
भूमर अल के चेतन-चिराग
बेदाग लाडणूं के दिमाग
मरुधर के मेघ मल्हार राग
अनुराग अथाह् विराग त्याग
भारत भूमि के हे सुभाग
अन्तर-अरणी में छिपी आग
जब गयी जाग
बन क्रान्तिदूत बेलाग-बाग
चल पड़े चरण चिन्मय अनाग
तो तड़-तड़ाग टूटे बन्धन
बस, इसीलिए शत्-शत् वन्दन् !

होता है देव स्वयं प्रकृति,
या कलाकार-कल्पित आकृति।
संस्कृति की कोई-सी विकृति,
कृति कहूं कि संसृति की स्वीकृति।

कोई के आदर की आवृति,
या धुंधली सी कोई विस्मृति।

प्रतिकृति के प्रति भी आदि निष्कृति,
धृति से सोचें तो पुनरावृत्ति
लेकर निवृत्ति,
कह देता हूं मत देव कहो ये तो संयति
जीवन परिमार्जन व्रती निभृति
निर्गन्ध संजोये निष्कांचन
बस इसीलिए शत्-शत् वन्दन् !

अणुओं से आलोकित

⊙

हरीश भादानी

⊙

अनाकार अणुओं से
    आकारों को
भीतर-बाहर
एकत्र जी लेने वालों का एक और
आकार दिया चाहने वाले अनुशासी
    मनुज के वातायन में झांक
    कि सीमाएं संकोचे बैठी हैं
        लिप्सा की मकड़ी
        बुनती है सुविधाएं
        धुआं-धुआं कर अहम्
        पोंछती है सारे बाहर पर
    बीमार मनुज की दशा कलापों से
    दुखी, आन्दोलित ओ धन्वंतरी !
इन्हें तू मंथन का आसव दे
    बहा, व्रतों-संकल्पों की उन्चास हवाएं
कि मकड़ी के जाले का तार-तार टूटे
        खुल जाए मन का वातायन
अणुओं से सरजित आलोकित अन्तर
    उजाले बाहर को—पूरे बाहर को।

तुलसी—देदीप्यमान सूर्य

⊙

मुनि विनय कुमार 'आलोक'

⊙

आचार्यश्री तुलसी—
अनास्थाओं के अंधकार को
चीर

एक नये रथचक्र पर
आरूढ़
देदीप्यमान
सूर्य।

और, अणुव्रत—
उस तेजोमय सूर्य से—
निसृत

निखिल विश्व हेतु
सुख,
शान्ति
और सहअस्तित्व प्रभृति
का प्रकाश बिखेरता
रश्मि पथ।

कौन भगीरथ-सा नभ छाया

⊙

श्यामसिंह 'शशि'

⊙

सूरज के संग दहता-तपता
कौन भगीरथ-सा नभ छाया
प्राची के उद्यान गगन में
एक गुलाबी गंगा लाया

जब-जब धर्म मृत्यु शय्या पर
लगा तोडने अन्तिम दम को
जन्म लिया तब किसी देव ने
और भगाया छाये तम को

कुछ बोले अवतार हुआ है
कुछ कहते भगवान मिला है
कुछ ने 'पैगम्बर' संज्ञा दी
या तीर्थंकर मान लिया है

तुम उसको युग संत कहो पर
तुलसी इसी रूप में आया
सूरज के संग दहता-तपता
कौन भगीरथ-सा नभ छाया

खाता अब विज्ञान, धर्म को
जैसे कोई कापालिक हो
या जीवित शव खाने वाला
आदिम युग का अधम असुर हो

भागम-भाग मची हर पथ पर
आपा-धापी या कोलाहल
शांति सत्य को लूट रहा है
कोई छल ले करके दल-बल

और अहिंसा की देवी को
हिंसा के हाथों नुचवाया
सूरज के संग दहता-तपता
कौन भगीरथ-सा नभ छाया

पहुंच गया है मनुज चांद पर
धरती के घर अंधकार है
है आवा का आवा दूषित
यहां-वहां सब अनाचार है

एक किरण केवल ऐसे में
अणु के व्रत-सी निरख रही है
भौतिकता के ककण मोह में
नव-जीवन पथ विरच रही है

इस पथ का अनुपम देवदूत
आया जग सौरभ बिखराया
सूरज के संग दहता – तपता
कौन भगीरथ-सा नभ छाया।

दर्शन

अणुव्रत समस्त मानव-समाज के लिए नैतिक विकास की एक आचार-संहिता प्रस्तुत करता है। वह अपने-आप में आत्मा की स्वतंत्र चेतना के द्वारा व्यक्ति-निर्माण और समाज-निर्माण का एक मार्ग है। इसलिए उसका लक्ष्य भी एक व्यापक भूमिका लिए है। उसका लक्ष्य है :

(क) जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, देश और भाषा का भेदभाव न रखते हुए मनुष्य-मात्र को आत्मसंयम की ओर प्रेरित करना।

(ख) मैत्री, एकता और शान्ति की स्थापना करना।

(ग) शोषण-विहीन और स्वतन्त्र समाज की रचना करना।

अणुव्रत और युगबोध

⊙

सोहनलाल द्विवेदी

⊙

भारत कहां है बन्धु ?
आज मैं कराऊंगा भारत का दर्शन
जहां टूट जाते देश काल के बन्धन
जिसका विराट रूप
हिमगिरि से ऊंचा है,
जिसके उदर में निहित
भव समूचा है
भारत यह नहीं मात्र जिसे आज देख रहे
मिट्टी की सीमा में जिसके उल्लेख रहे
उत्तर में जिसे हिमगिरि ने बांधा है
दक्षिण में जिसे सागर ने साधा है
यह मात्र उसका पार्थिव तन
इसमें भी कितना है आकर्षण !
गंगा और यमुना जिसका तन-मन
संवारतीं
कृष्णा और कावेरी
आरती उतारतीं
जिसका गुण गाते नहीं थकती है भारती !

भारत का धर्म-कर्म
भारत का सत्य-मर्म
चलता, जहाँ बोलता है
जीवन की जटिलतम ग्रंथियां खोलता है !
कैसी विडम्बना बन्धु
कैसी यह छलना है ?
भारत से बाहर आज
भारत का पलना है !
भारत का दर्शन और भारत की आस्था
दे रही संसृति को संस्कृति व्यवस्था !
और हम घर में परदेसी हैं,
धर्महीन, आस्थाहीन, भटके विदेशी हैं
इससे भी बड़ा व्यंग्य
होगा क्या नियति का ?
मनुज हम नहीं रहे
लगता सब मवेशी हैं।
भौतिकता के डण्डे से हांके सभी जा रहे,
केवल अर्थतृष्णा में भागे सभी जा रहे
कहीं भी टिकाव नहीं
कहीं टकराव नहीं
केवल भटकाव मात्र मानव की यात्रा !
हम भी बन गये हैं आज
प्राणहीन लौह-यन्त्र,
चलते हैं सदा जो मालिक की मर्जी से
कुछ भी हमें मिलता नहीं
कहीं कोरी अर्जी से,
करते हैं घेराव, करते हैं हड़ताल,
घर में ही लड़ते हैं हम,

ठोकते ही रहते ताल ।

रक्तपात, हिंसा आज रंग रहा
क्षण-क्षण है
नगर बने जंगल यह कैसा जीवन है !
इसका भी कारण कभी सोचा बन्धु क्या है ?
आत्मबोध भूल—
युगबोध अभिशप्त हम !
मात्र अर्थबोध,
अर्थ तृषा सन्तप्त हम !!
जीवन नहीं धन है, जीवन आत्मदर्शन है !

तो आओ बन्धु एक बार
अपने को जानें हम
अपनी अस्मिता, अपनी संस्कृति
पहचानें हम !
एक-एक बिन्दु-बिन्दु कड़ी-कड़ी
जोड़ें हम
अणुव्रत स्मृतियों से अमृत
निचोड़ें हम
प्रेयस नहीं, श्रेयस का ले विजय केतु
चलो पार करें बन्धु, दुस्तर भवसिन्धु सेतु !

अणुक्रांति

⊙

सुमित्रानन्दन पंत

⊙

जगत् में उथल-पुथल हो बाह्य,
महत्, पर युग की अंतः सिद्धि,
शक्ति-सक्रिय भौतिक जड तत्व
बढ़ाता जग की अतुल समृद्धि !
ज्ञान की खुलीं बीथियां दीप्त,
विश्व के प्रति बदली जन दृष्टि,
मुक्त नभचारी भूचर आज
खोजता दिग् अंचल में सृष्टि !

इधर कुछ ही दशकों में विश्व
सहसों वर्ष कर चुका पार,
और कुछ दशकों में विज्ञान
स्वर्ण युग को कर दे साकार !

महत् रचनात्मक अणु की क्रांति
बदल देगी मानव संसार,
जनों को देगा अभिनव सिद्धि
विद्युदणु का अद्‌भुत व्यापार!
आंतरिक ही रे शांति समग्र —

अधूरे, निष्फल बाह्य प्रयास,
प्रीति आनंद ज्योति के स्रोत—
हृदय अतलों में उनका वास !
बाह्य संयोजन निःसंदेह
मनुज को देगा सौख्य समृद्धि,
पूर्णता का स्वभाव सित ऊर्ध्व,
विकृति-भंगुर समतल अभिवृद्धि !

विपुल वैज्ञानिक आविष्कार
दार्शनिक सामाजिक सिद्धांत
समन्वय के सांस्कृतिक प्रयत्न
मिटा सकते न जगत् का ध्वांत !

दौड़ता चेतन में भूकंप
उमड़ता अवचेतन में ज्वार,
प्रथम बदले भीतरी मनुष्य
बाहरी बदले तब संसार !

महत् संकल्प बनाए मार्ग,
विजय पाए विकास पर क्रांति,
सफल हो मानव जीवन ध्येय
सृजन अनुकूल संगठित शांति !

लौह स्थितियों के शृंखल खोल
प्रकट हो मुक्त ऊर्ध्व चैतन्य,
विगत युग कपि से ले फिर जन्म
विश्व मानव-जन भू हो धन्य !

सुलभ मानव को उन्नत मूल्य,
शक्ति साधन उपलब्ध अपार,
नहीं क्यों मानव जीवन स्वर्ग
धरा पर होता फिर साकार ?

सोचता कवि, निश्चय ही राग
चेतना भू पथ की अवरोध,
मुक्त हो भाव जगत् की शक्ति
मनुज को दे नव-जीवन बोध !

छोड़ बर्बर विध्वंसक रूप
बन सके सृजनशील जो काम
मनुज को अंतरैक्य में बांध
बनाए जग को शोभा धाम !

ऊर्ध्वमुख हो प्राणों की ज्योति
रूपगत राग द्वेष से हीन,
भावना का बरसा सौन्दर्य
रचे भू जीवन स्वर्ग नवीन !

परिवेश

⊙

डा० गोपाल शर्मा

⊙

हर दिये की रोशनी
पल में निगलता,
और भी गहरा अंधेरा
हो रहा परिवेश।
सब तरफ जैसे कि—
"चलता है।"
अब न कोई सहमता है,
चौंकता है,
या दुबारा देखने को
आंख मलता है।
बात छोटी हो, बड़ी हो,
दे नहीं पाती कभी अब
तनिक भी संदेश।

इस कदर माहौल को
मजबूरियों ने डस लिया है
देखते ही देखते
काला हुआ धन-धान्य।

लार से टपके क्षणों को

हर कदम फिसलन बढ़ी है

किन्तु भगदड़ है वही सामान्य।

प्रश्न हुक पर भूलती

युग-चेतना के दिग्भ्रमों में

उलझ कर ही रह गया

सब मान्य याकि अमान्य।

कुछ अधिक लम्बे हुए हैं हाथ

सीना खींच जो मुसका रहे हैं

कुछ अधिक पतला हुआ है रक्त

मेहनत-कश रगों का,

झाग मुंह पर आ रहे हैं।

और यह सब कुछ, कि

है तो है।

अगर जिम्मेदार कोई

इन कठिन हालात का तो,

हम नहीं, वो है।

वो ?—कहीं कोई नहीं।

इस मोड़ में पलती घुटन के

गहन सन्नाटे तले

शायद हमारी धड़कनों के ही न हो.

झांई।

कि दामन झाड़ने को

हड़बड़ाहट में,

न हम दिखला रहे हों,

दूर अपनी फेंक परछाई

कि शायद

आसमानी सतह पर
काटे गए आकार को—
वह सिर्फ़ है खाली जगह।
जिस में सही कतरन सरीखे
बैठ जाते फिट, हमीं सब
व्यक्तिवाचक सर्वनामी
आप, मैं, 'औ' वह।

देखना है,
कब तलक वे नक्श खोलें
सामने अपनी शनाख्तों के
न होंगी पेश।
हर दिए की रोशनी
पल में निगलता,
और भी गहरा अंधेरा
हो रहा परिवेश।

व्रत समग्र मानव-सेवा का

⊙

चन्द्र दत्त "इन्दु"

⊙

अवगाहन कर गहन तिमिर में
ज्योति वरण करो—

शुचि, सुबुद्धि रख, कर्म समर्पित
पावन चरण धरो।

सत्य मार्ग हो लक्ष्य हमारा
अवरोधों का भ्रम न घेरे,
समता, ममता साथ लगाओ
चिंता क्या, हो घुप्प अंधेरे।

निष्ठा अमृत जैसी पावन
मन में नित्य वरो।

परहित चिन्तन मुक्त भाव से
व्रत, समग्र मानव की सेवा,
श्रम समाज में आदर पाए
बूंद पसीने की हो मेवा।

हिंसा को कर बिदा सदा को
जग की पीर हरो।

मानवता का ध्वज फहराए
वासन्ती मौसम हर्षाए,
अग, जग, दिशा, धरा, अम्बर में
गंधाती सौरभ भर जाए।

कल्याणी स्वर भर वीणा में
अणुव्रत नाद करो।

अणु-ज्योति

⊙

रवीन्द्र मिश्र

⊙

धूमिल विगत, दीपित जगत
क्षण स्नेहरत, क्षण अग्निवत
अणु-ज्योति प्रिय तम को दिखा।

द्युतिपगे, तू तम का विभव
लय एक, अवयव नित्य नव
अपक्षरण कण-कण में लिखा।

जल, स्नेहगंधा वायु कर
लघु वर्तिका की आयु भर
कुछ सीख जग से कुछ सिखा।

मुक्ति-बोध

⊙

सत्य मोहन वर्मा

⊙

यों तो निश्चित है
यह बात
ढलता है दिन
घिरती है रात
यात्रियों के चरण डगमगाते हैं
और कभी वे राहों में ही
थक बैठ जाते हैं
खिले हुए फूल को
माटी हरदम बुलाती है
फिर कोई अज्ञात हवा
डाली से विलगाकर उसे
धरती की बाहों में
फेंक चली जाती है !

यह सब होते हुए भी
जब कोई मोहक गन्ध वाली कली
असमय झर जाती है
तो एक प्रश्न, एक व्यथा
सूनी-सी आँखों में
पिघले हुए सपनों का
लावा भर जाती है !

शांतिदूत

⊙

जगदीश चतुर्वेदी

⊙

दो महाद्वीप सुलग रहे हैं, दक्षिणी गोलार्द्ध में उठ रही हैं लपटें
केवल सिर कटे धड़
बिलखते शहर.........

ओ शांति,
हवा में कौन-सा प्रपंच रचूं कि तुम्हें पा जाऊं
केवल सिरफिरों के दिए हुए वक्तव्यों पर कैसे विश्वास करूं

सुलग रहा है वियतनाम
तुर्की का आधा धड़
कौन से मानवीय संदेश को उच्चरित करता जा रहा है
यह लंबा जुलूस ?

कोई नहीं है जिसे शांति का अर्थ मालूम हो
बर्ट्रेन्ड रसल या सात्र या गांधी या किसी अहिंसा दूत की आवाज जो
अपरान्ह में कहीं खो जाती है

हल्ला कभी भी शब्द नहीं बन सकता
भीड़ कभी भी शांति के लिए इकट्ठी नहीं हो सकती
शांति के लिए इकट्ठा जन-समुदाय मौत की साक्षी है !

केवल आपा-धापी-केवल रक्तपात
कटे पिंड
युयुत्सु मानवों का संघर्ष
रक्त-पिपासुओं का तान्त्रिक गान
हवा में कौन फेंक रहा है मुट्ठियां
प्रेम के लिए कौन रिरियाता है उस ओर
कहां है सुकरात का शव.........?

कहां है बवी लोन.........
मैं शांति के अन्तिम निर्णय को पदाक्रांत कर
अपनी मुट्ठियों में उठा लूं आण्विक अस्त्र ?
विषैले कीड़े और अणुबम ?

अच्छा हो यह प्रश्न
अपने आप ही हल हो जाए
अणुव्रत अणुबम सा असर कर जाए।

रोशनी के कबूतर

⊙

नारायण लाल परमार

⊙

जाने कौन-सी दिशा से
भूले-भटके ये
रोशनी के कबूतर
झुण्डो में उड़ आए हैं
यहां-वहां गलियों में
आंगन, चौबारों में
छत की मुंडेरों पर
थके-मांदे आ बिलमे हैं
इन्हें सामूहिक आदर दो
रहने के लिए घर दो।

साथियों,
दिन मुकर्रर करो कि —
अंधियारा नीलाम हो
रोशनी किसी एक की न रहे
आम हो

धन्यवाद
इन प्यारे कबूतरों को
जो भूले-भटके से आए
हमारे लिए रोशनी लाए।

हो प्यार भरा परिवार जहां

⊙

मधुर शास्त्री

⊙

हो प्यार भरा परिवार जहां,
बोलो ऐसा संसार कहां ।

चलो तुम्हारे साथ चलूंगा मैं ।

जहां न डूबे शहनाई का मीठा स्वर कोलाहल में,
सात स्वरों के बीच न झगड़ा हो अनमेल अमंगल में,
जहां न जल की मछली तड़पे मरुथल वाले रेत में,
जहां न वे सब धनियां रोयें आधे जलते खेत में,

हर दर वन्दनवार जहां,
गाएं पेड़ मल्हार जहां ।

चलो तुम्हारे साथ चलूंगा मैं ।

जहां न कोई पत्थर मारे दूध दही की गगरी में,
जहां न कोई दुखिया दीखे ऐसी हंसती नगरी में,
जहां लिखे इतिहास न आंसू असमय गीले नयनों का,
दिन न उठाये लाभ रात के टूटे क्वारे सपनों का,

यह धन न बने दीवार जहां,
औ' मन न रहे बीमार जहां ।

चलो तुम्हारे साथ चलूंगा मैं ।

जहां पसीना माटी में मिल खिलने लगे गुलाबों-सा,
जहां बने इंसान न परवश पुतला किन्हीं अभावों का,
जहां जवानी धोये आंचल उठती हुई तरंगों में,
बचपन खींचे चित्र जहां मन चाहे रंग-बिरंगों में,

हर सुन्दर का सत्कार जहां,
शिव, सत्य बनें पतवार जहां।

चलो तुम्हारे साथ चलूंगा मैं।

किसी कली का शील भंग क्यों करता है असभ्य भंवरा,
क्यों रहता है कोमलता के द्वार कठोरों का पहरा,
जहां न कोई प्रश्न अधूरा टकराये अधिकारों से,
जहां न व्याह रचाएं कांटे खुशबू भरी बहारों से,

पद-लुंठित हो तलवार जहां,
औ' मुकुट बना हो प्यार जहां।

चलो तुम्हारे साथ चलूंगा मैं।

कोई दीप नया

⊙

चन्द्रसेन 'विराट'

⊙

गढ़ फिर कोई दीप नया तू मिट्टी मेरे देश की।

अंधी हुई दिशाएं सारी यूं अंधियारी छा रही
किरण तोड़ती सांस रोशनी जीने को छटपटा रही
ऐसा कुछ गत्यावरोध है आज विश्व की राह में—
पथ भूले बनजारे जैसी पीढ़ी चलती जा रही।
कोई बांह पकड़ ऐसे में सही दिशा का ज्ञान दे
सख्त जरूरत है दुनियां को फिर कोई दरवेश की।

देवभूमि यह जन्म दिये हैं इसने ही अवतार को
ज्योतिस्तंभ बन हरती आयी यह जग के अंधियार को
मुझको है विश्वास कि धरती बांझ नहीं इस देश की—
फिर से कोई नया मसीहा देगी यह संसार को।
इसकी मिट्टी उड़कर बैठी सूरज के भी भाल पर—
नित उभरी आवाज यहीं से शांति प्रेम संदेश की।

यद्यपि प्रलयंकारी घन से घिरा हुआ आकाश है
फिर भी मानव के भविष्य से मेरा मन न निराश है
शायद इसी मोड़ के आगे निज अभिलाषित लक्ष्य हो—
इसी तमिस्त्रा के पीछे भी कोई नया प्रकाश है।
जब तक मेरा देश मनुजता होना नहीं उदास तू—
शुभ वेला है निकट जनम की फिर कोई अवधेश की।

हम शान्ति, अहिंसा के पूजक

⊙

श्यामलाल 'शर्मा'

⊙

इक गीत लिखूं लावा उगले, इक गीत लिखूं धूआं निकले !

वह गीत कि भागे अंधियारी
वह गीत कि फूंके चिनगारी
सब एक बनें काबा-काशी
सब कुछ, पहले भारत वासी

एकता उठे सागर के सम, जो जाति-पाँति नदियां ढंकले !

हर कृषक शपथ ऐसी खाए
खेतों में हरियाली छाए
श्रमिकों की बाहें फड़क उठें
श्रम में बिजली-सी चमक उठें

हम शान्ति-अहिंसा के पूजक, हर उर में केवल प्यार पले !

समता का चहुं दिशि बिगुल बजे
हर धर्म देश के लिए सजे
जय जननी भारत माँ विशाल
तेरा सदैव हो उच्च भाल

लेखनी लिखे बस शब्द यही, हिमगिरि की शीतल छांव तले !

समवेत गीत

⊙

राजेन्द्र अनुरागी

⊙

बुद्धि को विचार का प्रकाश चाहिये !
सूर्य यहीं-कहीं आस-पास चाहिये !

कौन रंग किरण कहूं, बताओ तो सही
अनेक अन्त भेद, सत्य पाओ तो सही
इस तरह मनुष्य का विकास चाहिये !
सूर्य यहीं-कहीं आस-पास चाहिये !

लिच्छवी-कृपाण से अधिक समर्थ है,
शक्ति में क्षमा न हो, महा अनर्थ है,
इस तरह समाज की तराश चाहिये
सूर्य यहीं-कहीं आस-पास चाहिये ।

कौन जमाखोर है, बताओ तो सही
परिग्रह का नर्क भुगतवाओ तो सही
समता में ममता का वास चाहिये !
सूर्य यहीं-कहीं आस-पास चाहिये ।

बुद्धि को विचार का प्रकाश चाहिये !
इस तरह मनुष्य का विकास चाहिये !
इस तरह समाज की तराश चाहिये !
समता में ममता का वास चाहिये !

सूर्य यहीं-कहीं आस-पास चाहिये।

अणुव्रत—अणुविस्फोट-सा

⊙

गबरसिंह रावत

⊙

ध्वंस और निर्माण आज यों तो दोनों हैं अपने हाथ
किन्तु सदा ही हमने तो है पहले दिया सृजन का साथ

वह जो मरु के भीतर हमने भीषण अणु-विस्फोट किया है
बतलाता है कुछ देशों को कैसे हमने सबक दिया है
सत्य, अहिंसा, संयम के पर हम ही हैं व्रतधारी
इस पथ से जो गया उसी के आगे झुका हमारा माथ

रेगिस्तानों में जल की अब धाराएं हम दौड़ा देंगे
सूखी, बंजर धरती को भी हरियाली से ओढ़ा देंगे
खोद सुरंगें दुर्गम को भी राहों से अब जोड़ेंगे हम
भूखा-प्यासा आगे कोई नहीं रहेगा दीन-अनाथ

ऊंचे-ऊंचे शिखरों को भी हम सपाट बना डालेंगे
गहरे नद, तालों, गड्ढों की गहराई पर भी छा लेंगे
छिपी हुई बहुमूल्य सम्पदा धरती के भीतर से लेंगे
मानव का कल्याण करे जो ऐसा रहा हमारा पाथ

ध्वंस और निर्माण आज यों तो दोनों हैं अपने हाथ
किन्तु सदा ही हमने तो है पहले दिया सृजन का साथ

आस्था और आस्था

⊙

केदारनाथ कोमल

⊙

हर दुख संग इतना
दुखी होना चाहता हूँ
कि मुस्करा सकूं !

हर दर्द संग इतना
छटपटाना चाहता हूं
कि नित नए गीत गा सकूं ।

हर आह संग इतना
बिखर जाना चाहता हूं
कि जीवन को गुदगुदा सकूं ।

हर अंधेरे संग इतना
सियाह होना चाहता हूं
कि रोशनी बन जगमगा सकूं !

हर थकन संग इतना
थक जाना चाहता हूँ
कि उषा संग खिलखिला सकूं !

हर पतझड़ संग इतना
तड़पना, टूटना, बिखरना
    चाहता हूं
कि बसंत बन लहरा सकूं ।

मैं, यानी मनुष्य

⊙

जीवन प्रकाश जोशी

⊙

दिन दीखता है,
लम्बी-लम्बी, लाल-लाल टांगों वाला एक शैतान,
दबोचे हुये दुनिया का पूर्वी और पश्चिमी गोलार्द्ध,
भुजाओं में जकड़े,
ध्वस्त नगरों-महानगरों के फासिल्स और सभ्यता की नंगी देह
मगर इस कुदृश्य का सृष्टा और दृष्टा,
कोई शैतान तो नहीं है,
सिर्फ मैं हूँ
मैं यानी मनुष्य !

रात दीखती है,
बिखरे बालों, खड़े कानों और गोल आँखों वाली एक डायन,
जिसके सिर पर चांद उल्टे तवे-सा रखा है,
पैरों तले मंगलग्रह का खून बहता है,
जिसके वज्र दंतों से दांत किट-किट जूझ रहा है
लहूलुहान हिरण्यगर्भ,
मगर इस कुदृश्य का दृष्टा और सृष्टा
कोई शैतान तो नहीं हैं,
सिर्फ मैं हूं,
मैं यानी मनुष्य !

प्रकृति, अणु और जीवन

⊙

उमाशंकर 'सतीश'

⊙

पहाड़ियां रमणीक हैं
नदियां दुग्ध धवल
हरे भरे तरुवृन्त
रंग-बिरंगे फूलों से
शोभित ये घाटियां
विहगों का कलकूजन
गुंजित मन !

गांवों में जीते हैं
संत्रस्त दलित मानव
कीचड़ के कीड़े-सा
रेंग रहा जन-जन
मानवता खोल नयन
अणु-अणु से लेकर
जीवन का नया मनन ।

मुझ में ही

⊙

इन्दु जैन

⊙

मोहरा नहीं है मेरे पास
कि मुट्ठी में छिपा लूं
जीभ तले
  दबा लूं
अंगारों पर चलती चलूं ।
तभी तो
सामान्यों में सामान्य ही रहूंगी
हातिमताई नहीं हूंगी ।

पहेलियों से कतराती
डूबती नहीं
तैरती--
सतही रहती हूं
एक मात्र जीवनार्थी विष से सहमी
जड़ रासायनिक शर्बत पीती हूं—

अकेलेपन का अहसास
बड़े से बड़े को तुच्छ बना
जाता है
पर
भीड़ में आते ही
व्यक्तित्व लहर-सा डूब जाता है ।

कीच प्राणदायी हो जाए तो
कमल हूं मैं,
नहीं तो सेवार और काई
दूसरे को फिसलाती फिसल जाऊं
या
ऊर्ध्वगामी सुगंध की लहरी-सी उठूं ?

उसी पर निर्भर है सब
उसी पर
मोहरे पर
भीतर फूटते अंकुर पर
हथेली में दबा भी नहीं है
जीभ में पला भी नही है
कतरा है मेरा
मेरा कदम
जो एक-एक सीढ़ी पर चलता
छत पर चढ़ा है.........

अणु-शक्ति

⊙

पुष्पधन्वा

⊙

बूंद-बूंद से समुद्र
कण-कण से पहाड़
बीज से पेड़ छायादार
मिल-मिल कर
खिल-खिल कर बने सब ।

अणु बहुत तुच्छ है, अदृश्य है
पर, अणु विस्फोट महान् शक्ति है !

अणु-अणु संकल्प लो
नन्हा-सा व्रत लो ।
स्वयं शक्ति धारण कर
अणुराह दिखाएगा
बूंद-बूंद से समुद्र
कण-कण से पहाड़
बीज से पेड़ स्वयं
खड़ा हो जाएगा ।

आदमी बनाम आईना

⊙

विनोद शर्मा

⊙

माना कि,
तुमने लोगों को—
उनके चेहरे दिखाए
मगर, दूसरों को—
उनके बौनेपन का अहसास करा
तुम्हें क्या मिला
सच कहूं
मसीहा बनने के चक्कर में—
तुमने अपनी जिन्दगी खराब की
काश, तुम्हें मालूम होता
कि राजा भोज और गंगू तेली में
एक बुनियादी फर्क होता है
और यही बुनियादी फर्क
छिद्रान्वेषण को—
पथ-प्रदर्शन से अलग करता है
अच्छा होता, कि तुम—
अपने गिरेबां में हाथ डालकर देखते

अगर तुम अपना चेहरा—
अपने सामने रखते
उसे पढ़ते
और गढ़ते
तो आज तुम एक संस्था होते।

चेहरे पढ़ने
और चेहरे गढ़ने की दूरी को,
नापने की असमर्थता ने—
तुम्हें आईना बनाकर रख दिया,
और तुम जानते ही हो
कि आईना
चेहरे की कमियां
पकड़ तो सकता है,
सुधार नहीं सकता।

स्वयं, यानी प्रश्न और उत्तर

⊙

रामकुमार 'कृषक'

⊙

वे समस्यायें नहीं
जो दिख रही हैं
वह धरातल भी नहीं
जिस पर खड़े हम
वह नहीं जीवन
जिसे हम जी रहे हैं।

समस्यायें
धरातल
और जीवन-ढंग
सब भौतिक हमारा
जबकि हर स्थूल का
संबंध उसके सूक्ष्म से है
दृश्य के अदृश्य से है।

वृक्ष जीवन-रस जहां से
ले रहा है
देह को यह रूप
जो क्षण दे रहा है

आंख से दिखता नहीं है वह

दृश्य की यह शोध
उसकी शल्य-क्रिया
जूझने का ढग समस्या से
धरातल से धरातल पर फिसलना
भौतिकी संसार की पागल प्रथा है

शोध को
हर शल्य-क्रिया को
समस्या को
अभौतिक के धरातल पर
पुनर्प्रतिष्ठ होकर
देखना होगा,
समझ कर जूझना होगा स्वयं से

स्वयं, यानी प्रश्न और उत्तर
समस्यायें, सभी का हल
धरातल, तल
समंजन की महा विस्तीर्ण भूमि
शोध की
हर शल्य-क्रिया की
महत् प्रयोगशाला

द्वारा को, वातायनों को
कर निरावृत
खोल कर आकाश—
उसके रंध्र सारे,
फर्श का कचरा सभी
कर भस्म

प्रक्षालन पुनः कर

हम इसी प्रयोगशाला में घुसें
बैठे बहुत जीवन्त होकर
क्योंकि पीड़ित मनुजता की
आंख हम पर है,
हमारी आंख भीतर

दृष्टि भीतर से उठेगी जो
वही बाहर जियेगी
शक्ति जो अन्तः सुधा से तृप्त होगी
बस वही
हर जहर बाहर का पियेगी।

आज का सूरज

⊙

भवानी प्रसाद मिश्र

⊙

इस समय मैं एक बगीचे में बैठा हूँ
मेरे आस-पास के पेड़ों पर
पछी चहक रहे हैं
और महक रहे हैं
पौधों पर फूल !
सूरज तक को सुख देने लग रहे हैं
ये चहकने वाले पंछी
महकने वाले फूल

और सूरज
कुछ अधिक ही प्रसन्न-भाव से
आसमान पर उपर उठ रहा है।
बड़ी अच्छी है यह घड़ी
जिसमें मैं चहकने वाले पंछी
और महकने वाले फूलों के साथ-साथ
सारी दुनिया के लोगों के बारे में
गा-पा रहा हूं और प्रसन्न-भाव से
आ-जा पा रहा हूं

उनके दुखों के आर-पार
सोच रहा हूं दुनिया के आने वाले दिन
दुनिया के आने वाले पल
दुनिया के आने वाले छिन
बहुत जल्दी इस तरह
आसमान में ऊपर उठेंगे
जिस तरह आज की इस सुबह में
सूरज आसमान में ऊपर उठ रहा है

चाहता हूं गिनना न पड़े
आने वाली पीढ़ियों को
आने वाली घड़ियां
चमका सकें वे
उन्हें सूरज और चांद और सितारों की तरह
बोझ न लगे उन्हें दिनों का
न दिनों को उनका
लग सकें वे एक-दूसरे को
सहारों की तरह !

अणुव्रत से राष्ट्र निर्माण...?

⊙

डा० शेरजंग गर्ग

⊙

तुमने रूमाल से क्या पोंछा है ?
चेहरे का पसीना या आंखें !
उदास क्यों हो ?

तुम अकेले तो नहीं हो—
तुम्हारे साथ रोज साइकिलों के रेवड़ में
दफ्तर जाने वाला डालचन्द चपरासी है,

निचले तल्ले में
अपनी औकात से ज्यादा किराया चुकाने वाला बाबू है,
तुम्हारे साथ रोज-रोज बस की लाईन में
धक्के खाने वाले कोहली, चन्दोला और कपाही हैं,

राशन में 'कैसे भी गेहूं' की प्रतीक्षा करने वाले
आस-पास के तमाम पड़ोसी हैं,

डालडा की क्यू में आखिरी दम तक खड़े होकर
खाली हाथ लौट आने वाले धैर्यवान हैं !

सचमुच तुम अकेले नहीं हो
क्योंकि देश का प्रत्येक
सही सलामत ईमान वाला आदमी

तुम्हारी ही तरह जिन्दगी को
किसी-न-किसी क्यू में गुजार रहा है

मजेदार और विडबनापूर्ण
(दोनों साथ-साथ)

स्थिति तो यह है—
कि लोगों के फरेबों, जालसाजियों ने उन्हें
वाणिज्य चैम्बरों, आयोगों, विश्वविद्यालयों में
कहीं-न-कहीं सत्तारूढ़ बना दिया है
और तुम्हारे सौजन्य, देश-प्रेम, मासूमियत और सादगी ने
तुम्हें किंकर्तव्यविमूढ़ बना दिया है।

तुम्हारे पास राशन नहीं है
मगर तुम्हारा दिल क्या यह मानता है
कि अन्न के गोदामों में लूट मचाकर
कुछ मिलेगा ?

तुम भीतर-ही-भीतर
ज्वाला मुखी के समान सुलग रहे हो
और समूचा भारत बंद पड़ा है।

और फिर एक प्रश्न
दहकते अंगारे-सा
राष्ट्र-निर्माण.........?

और उत्तर में
अणुव्रत......?
मौन साधे खड़ा है !

विकसित असंस्कृति

⊙

प्रेमानन्द चन्दोला

⊙

यूं कहने को
कुछ न कुछ सुघढ़ता सभी चीजों में होती है
लेकिन कुछ में नहीं भी होती न !
जैसे कि बोरे में।
इसके स्वरूप को
सुन्दर तो शायद ही कहे कोई
जो ऊपर से नीचे
या नीचे से ऊपर एकसार
कहीं कोई बारीकी, आकर्षण
उभार या विभेदन नहीं
और जिसमें —
फूले रहने की आत्मकेन्द्री प्रवृति के साथ-साथ
चारों कोनों में पसरकर
मनमाने ढंग से येन-केन-प्रकारेण
बस, अपनी भौतिक रिक्ति को बदलने
और स्वयं को भरने-पूरने की भूख होती है।
        अफसोस कि,
बेजान बोरे तक ही यह चलन होता
तो कोई बात न थी
किन्तु ओ मनीषियो !

सचमुच तब क्या किया जाए ?
जब
कुछ न कर सकने वालों को
आत्मबोध हो जाए
और आए दिन यह अनुभव सालता रहे कि,
—जिस धर्मी-कर्मी महानायक की विकास-कथा को
डारविन, लामार्क आदि विज्ञानियों ने
विज्ञान की कसौटी पर आजमाया है
और जिसकी गौरव-गाथा को शताब्दियों से
हमने आदर्श ग्रंथों के पन्नों में रगा पाया है,
– उसी विकसित और सर्वोच्च प्राणी की नागरिकता
यानी पढ़े-लिखे, गुणे और बने-ठने
सुघढ़-सभ्य-सम्पन्न मानव की संस्कृति
आत्मिक और मानवोचित मर्यादाओं के दुर्भिक्ष में

आज—

मात्र काला बोरा बन कर रह गई है !

अशुचि

⊙

दिविक रमेश

⊙

हां, मैंने जान लिया
हर देह मे
एक दुर्घटनाग्रस्त लाश है।

चिथड़ा हुआ मांस
और
रक्त-सनी हड्डियां।

कितना वक्त बर्बाद कर दिया
खाल की ओट में छिपी
लाश
बहलाने में

भीतर तक उधड़ना
नहीं आता
हरेक को।

कितना सुन्दर लगा था
ऊपर लहलहाती लहर;

विना सीखे
कूद पड़ा था
और डूबने के बाद ही
कीचड़,

गड्ढे
जाने क्या-क्या उभर गया था।
आंखों के आगे
एक आदमी
पीला हो चुका था

सच,
मैं तब भी जिन्दा था !

अगवानी रोशनी की

⊙

विश्वनाथ मिश्र

⊙

सूरज की एक किरण ने
शोर डाला है
जागो !
सवेरा बहुत थोडी देर के लिए होता है ।
जागने वाले इस सवेरे के
बहुत समय तक रखते है जमाना
अपने साथ ।
और वे, जो सो कर खोते हैं
मलते हैं हाथ ।
जागो ! दौड़ शुरू होती है
हमारे चाहने न चाहने पर
वह पहली किरण जो दूर आसमान पर
उजाला बोती है
अगर न देख पाये तो
वे किरणें जो तुम्हें घेर लेंगी
रोशनी के बजाय
तुम्हारी आंखें चौंधिया देगीं !

आत्म-प्रवंचना

⊙

पुरुषोत्तम 'प्रतीक'

⊙

मैं......
अपना घर भूल गया हूं,
शायद...
विपरीत चलता रहा हूं
उसकी तलाश में
बहुत सामान लाद लिया है
इस बीच सिर पर
बोझ पहन कर पाने में असमर्थ
ढूंढ़ता हूं वाहन
सुनसान में

मेरे कान में
आती है आवाज
क्रमशः बढ़ती जाती है
मेरा रुख बदल जाता है
लगा कोई आता है
घर—
मेरे मुंह पर
चांटा मार कर
बह जाती है हवा—
सांय-सांय सररऽर...

आंखों में
छोटी और छोटी होकर
पुतलियों में लुप्त हो जाती है
जाने कहां खो जाती है
आकृति

कान के सूराख सुरंग हो जाते हैं
तब मैं
सोचता हूँ—
सदेह जीना भी कोई जीना है !

शूल-फूल अणुव्रत अपनाए

⊙

विमला दयाल

⊙

सत्यमेव जयते, जयते, जयते ।

चाहे नभ में घन घिर आएं, चाहे गगन अंधेरा छाए,
विद्युत अम्बर के आंगन में ज्योति-किरण का चौक लगाए,

किरणें लुक छिप चित्र बनातीं, चिर प्रकाश जयते ।
सत्यमेव जयते, जयते, जयते ।

श्रम के दीप्तानल में तपकर, धरती नव शृंगार सजाए,
श्रमिक के जलकण से धुलकर, उपवन रूप अनोखा पाए,

दूर अलसता बैठी रोए, कर्मक्षेत्र जयते ।
सत्यमेव जयते, जयते, जयते ।

लतिका कंटक के आंचल पर, मधुर-मधुर नित पुष्प सजाए,
सर्पों से चुम्बित चन्दन भी, शीतलता और गन्ध बहाए,

शूल-फूल अणुव्रत अपनाए, मानवता जयते ।
सत्यमेव जयते, जयते, जयते ।

चादर बिना सुई

⊙

जगपाल सिंह 'सरोज'

⊙

नागफनी बन गई
अभी तक
जो थी छुई-मुई
राम जाने क्या बात हुई!

लोक लाज की उड़ा चुनरिया
बिछुवे फोड़ दिये
तन-मन बन्दी करने वाले
रिश्ते तोड़ दिये
घूंघट खोले खड़ी द्वार पर
दुलहिन नई-नई!

बागी हो गई धूप, सूर्य को—
आंखें दिखा रही
सड़कों पर बैठी दोपहरी
नारे लगा रही
रसिया गाती सांझ हाय
आंसू में डूब गई!

गन्धाते स्वर्णिम सपनों को
लकवा मार गया
तूफानों से जीता जो मन
खुद से हार गया
पढ़ती ईद नमाज ओढ़कर
चादर बिना धुई !

जीवन के सत्य को

⊙

लक्ष्मी त्रिपाठी

⊙

विविध सौंदर्य-उपकरणों
आभूषणों से सजी
निर्वस्त्रा नारी-सी,
जंगली पौधों
कैक्टसों से घिरी
निर्गन्धा कोठी-सी,
सभ्यता का स्वांग भरती
प्रगति का दावा करती
पाग़ल यह पीढ़ी
आवारा बंजारे-सी
भटका-भर करती है !

प्रेम जिसे मिला नहीं
जाने क्या प्रेम भला
अंदर से भूखी-सी
आकुल-सी पलती है,
कोई है बीटल तो
कोई है बीटनिक

हिप्पी बन जाने की
छलना में पलती है
निर्वस्त्रा, निर्गन्धा, आवारा आकुल-सी
भूली-सी भटकी-सी
पागल यह पीढ़ी
पग-पग पर मरती है !
जीवन के सत्य को
हिंसा से ढकती है।

रश्मियों पर तम

⊙

रघुवीरशरण 'मित्र'

⊙

रश्मियों पर तम प्रसूनों पर धधकती आग।

जाग विप्लव जाग।
शेषशायी जाग।
त्याग निद्रा जाग।

रो रहा उत्थान हंसता है पतन।
प्रेत-सा हर ओर है आत्मा अतन॥
मर गया विश्वास जीवित है मरण।
आज इति की जय, रुके गति के चरण॥

सभ्यता को डस रहा स्वाधीनता का नाग।
रश्मियों पर तम प्रसूनों पर धधकती आग।

जाग विप्लव जाग।
शेषशायी जाग।
त्याग निद्रा जाग।

तन मधुर, मन में जहर क्या यह मनुज।
साधुओं के वेश में फिरते दनुज॥
न्याय की लाशें बिकीं बाजार में।
आदमी अन्धा हुआ अधिकार में॥

ओ परीक्षित ! फूल में लिपटा हुआ है नाग ।
रश्मियों पर तम प्रसूनों पर धमकती आग ।

जाग विप्लव जाग ।
शेषशायी जाग ।
त्याग निद्रा जाग ।

रक्त-रंजित नभ धरा जय पर अनय ।
आग उपवन में लगी मधुकर अभय ।।
भूल बैठे दीप शलभों का वहन ।
शान्ति करती है प्रहारों को सहन ।।

जल रहा है सत्य नेह औ' लुट रहा है बाग ।
रश्मियों पर, तम प्रसूनों पर धधकती आग ।

जाग विप्लव जाग ।
शेषशायी जाग ।
त्याग निद्रा जाग ।

प्यास को अंगार देते हैं कुएं ।
मित्र कोई भी नहीं कैसे हुए ।।
जिन्दगी की रेत पर दीवार है ।
कुर्सियों पर हर तरफ तकरार है ।।

देश के धन में लिपट बैठे भयंकर नाग ।
रश्मियों पर तम प्रसूनों पर धधकती आग ।

जाग विप्लव जाग ।
शेषशायी जाग ।
त्याग निद्रा जाग ।

अजनबी संदर्भों के बीच

⊙

धनंजय सिंह

⊙

सूर्य की किरणें
अंधेरे का
बढ़ाकर हाथ स्वागत
कर रही हैं

रोशनी
विश्वासघातिन-सी
हुई है मौन
दीवारें
चिढ़ाने लग गईं मुंह आदमी का

पेड़-पौधों से
हवा की दुश्मनी है
गैल-गलियारे, सड़क
बहका रहे हैं पांव
कैक्टस के फूल
कोटों पर सजाए
अजनबी-सा देखता सब गांव

कोई
यह नहीं कहता
कि आंसू पोंछ डालो
चांद को
धब्बे छिपाने की पड़ी है
न जाने
आज यह कैसी घड़ी है
चलो हम तोड़ दें एक-दूसरे का मन।

सहनशक्ति

⊙

गुणमाला नवलखा

⊙

कान बेधन के दर्द को
कितनी ही बार सहा है
मौन हो पिया है
इसी से वह क्षण
बिन बिखरे गया है
खंडित दीवारों के
छितराये टुकड़ों को
हथेलियों में समेटते रहे हम
और आज,
पूरी दीवार अंगुलियों में थामे हैं।

सतपथ

⊙

हरिश्चन्द्र पाठक 'अजेय'

⊙

पथ की बाधाओं के सम्मुख झुक जाता तो इन्सान नहीं।

जीवन को मौत छला करती
पर सृजन मौत पर मुस्काता
हर शाम चिता जलती दिन की
हर प्रात नया दिन आ जाता।

असफलताओं की ज्वाला में, फुंक जाता जो अरमान नहीं।

फूलों में बंध न सकी सरिता
तट के मंसूबे टूट गए
युग को कब धारा बांध सकी
जब बांधा, बन्धन छूट गए।

गति की सीमाओं में बंध कर, रुक जाता जो तूफान नहीं।

सतपथ केवल साध्य पथिक का
जीवन तो मात्र भुलावा है
शूलों में राह बना ले जो
मंजिल पर उसका दावा है।

सुविधा की पहली बोली पर बिक जाता जो ईमान नहीं!

एक ही प्रकाश है !

⊙

सत्य प्रकाश प्रखर

⊙

एक वायु एक जल एक ही प्रकाश है ।
अग्नि एक धरा एक, एक ही आकाश है ।

जो एक को अनेक में विभक्त कर रहे —
उनसे कहो भेद की दीवार तोड़ दें ।

सीमायें खींच रही अपराधी वृतियां,
बटवारे धूप छांव के ।

स्वार्थी जरीपों से नाप रही नीतियां ।
टुकड़े हर देश गांव के ।

जिन हाथों में कपोल हतिनी मुलेल ।
उनसे कहो घातक हथियार छोड़ दें ।

लहराती लाल हरी या पीली झाड़ियां
खेमों के अलग-अलग चिह्न ।

संधि किये बैठे हैं अपराधी विश्व के ।
मानवता है उदास खिन्न ।

चौतरफा लगती हैं लाशों की मंडियां ।
उनसे कहो खूनी व्यापार छोड़ दें ।

सत्यानुभूति

⊙

मल्लिका

⊙

सत्य के अनासक्त दृश्य
होने से ही मात्र
काम नहीं चलता,
विद्रूप स्थितियां, व्यंग
विसंगतियां
अभिव्यक्त करें
—और करें दावा
उनसे असम्पृक्त,
तटस्थ रहने का,
असम्भव यह सब,
सत्य मांगता है—
निज सौन्दर्य और मंगल पक्ष,
अन्तरात्मा का आत्मा से
जुड़ने का भाव
जुड़ाने का प्रयास,
—और रचनात्मक दृष्टि
विवेक भीगी।

सत्य-क्षमा-स्नेह

⊙

राजकुमार सैनी

⊙

असत्य चाहे
कितना भी मानवीय हो,
शिव हो, सुन्दर हो,
सत्य से अधिक वरेण्य नहीं है।
(फिर वह सत्य बिना विशेषण ही क्यों न हो)

(२)

दंड चाहे,
कितना भी अनिवार्य हो,
युक्तियुक्त हो, व्यावहार्य हो
क्षमा से अधिक श्रेण्य नहीं है
(फिर वह क्षमा अयाचित ही क्यों न हो)

(३)

घृणा चाहे
कितनी भी हार्दिक हो,
यथोचित या सुचिंतित हो,
स्नेह से अधिक मान्य नहीं हैं
(फिर वह स्नेह अकारण ही क्यों न हो)

मानव और यंत्र

बघनखा आदर्शों का पहन
तुम्हारे यांत्रिक हाथ
आकाश से भी ऊंचे उठ गये।
किंतु
बाप-दादों से विरसे में मिला
तुम्हारा मन
तुम्हारा तन
कितना बौना है आज भी!

—श्यामसिंह शशि

इस ग्रंथ के कवि

- **बच्चन**

  हिन्दी के जाने-माने स्वनामधन्य कवि। हालावाद के जनक। अनेक काव्य-ग्रंथों के सृजेता। अंग्रेजी साहित्य में पी. एच. डी. किन्तु लेखन कार्य एवं सेवा राष्ट्रभाषा की।

- **मुनि श्री नथमल**

  आचार्य श्री तुलसी के प्रमुख शिष्य, सुप्रसिद्ध दार्शनिक और लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यकार। संस्कृत के आशु कवि।

- **गोपाल प्रसाद व्यास**

  हिन्दी के हास्यरसावतार! दिल्ली प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन के सुदृढ़ स्तंभ। सुपरिचित व्यक्तित्व।

- **क्षेमचन्द्र सुमन**

  लब्धप्रतिष्ठित कवि। अनेक साहित्यिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के वरिष्ट अधिकारी।

- **प्रभाकर माचवे**

  ख्याति-प्राप्त साहित्यकार। लेखक, कवि, समीक्षक। अनेक भाषाओं के ज्ञाता। साहित्य अकादमी के यशस्वी सचिव।

- **निर्भय हाथरसी**

  सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कवि।

- **सलेख चन्द 'मधुप'**

  हिन्दी के उदीयमान युवा कवि।

- **फूलचन्द 'मानव'**

  हिन्दी कवि।

- **काका हाथरसी**

  हास्य रस के सुविख्यात कवि। कवि-सम्मेलनों की जान।

- **ओम प्रकाश द्रोण**
  कवि वर।
- **कीर्तिनारायण मिश्र**
  सुपरिचित कवि।
- **विद्यावती मिश्र**
  सुपरिचित हिन्दी कवयित्री।
- **मैथलीशरण गुप्त**
  स्वर्गीय सुपरिचित कवि। अनेक काव्य ग्रंथों की सृजेता।
- **ओमप्रकाश गुप्त**
  पेशे से इंजीनियर; रुचि कविता में।
- **नरेन्द्र शर्मा**
  जाने-माने कवि।
- **बाबू राम पालीवाल**
  हिन्दी साहित्यकार।
- **श्रीमतंवाला मंगल**
  सुपरिचित कवि।
- **शशिप्रभा चावला**
  देश-विदेश में भ्रमण। उदीयमान लेखिका तथा कवयित्री।
- **महावीर प्रसाद 'हलवाई'**
  ग्वालियर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिन्तक।
- **चन्द्रपाल सिंह 'चन्द्र'**
  श्रेष्ठ कवि।
- **कु. आशा शर्मा**
  राजनीति-शास्त्र की अध्येता किन्तु कविता का मोह।
- **राजेन्द्र मिलन**
  आगरा के सुप्रतिष्ठित गीतकार। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध।
- **मदन 'विरक्त'**
  विख्यात सर्वोदयी कार्यकर्ता। अच्छे कवि, लेखक तथा पत्रकार।

- **गोपीनाथ अमन**

  उर्दू के मशहूर कवि। सुपरिचित साहित्यकार।

- **कालीचरण 'असर देहलवी'**

  सुप्रसिद्ध साहित्यकार।

- **चन्दनमल 'चांद'**

  'जैन जगत' के प्रबंध सम्पादक। सुपरिचित कवि।

- **विशाल त्रिपाठी**

  अच्छे कवि। हिन्दी कार्य से संबद्ध।

- **रमेश कौशिक**

  हिन्दी के श्रेष्ठ कवि। भ्रमण की रुचि। शायद इसीलिए परिवहन अधिकारी।

- **अर्जुन भारती**

  उदीयमान युवा कवि।

- **अल्हड़ बीकानेरी**

  ख्याति-प्राप्त हास्य कवि। मंच के जादूगर।

- **सत्यप्रकाश बजरंग**

  सुपरिचित कवि। दिल्ली की कई साहित्यिक संस्थाओं के सुयोग्य कार्यकर्त्ता।

- **सुरेन्द्र**

  युवा कवि।

- **बुधमल शामसुखा**

  सुपरिचित कवि। साहित्य-मर्मज्ञ एवं समाज-सेवी।

- **कन्हैयालाल सेठिया**

  राजस्थान के मूर्धन्य कवि एवं साहित्यकार समाज-सेवी।

- **दिनेशनंदिनी**

  सुप्रसिद्ध दार्शनिक कवयित्री। समाज-सेविका और चिन्तनशील लेखिका।

- **श्रमण सागर**

  आचार्यश्री तुलसी के विद्वान शिष्य। सुप्रसिद्ध कलाकार। इतिहास-मर्मज्ञ तथा लोककवि।

● **हरीश भावानी**
सुकवि ।

● **मुनि विनय कुमार 'आलोक'**
आचार्यश्री तुलसी के सुप्रिय शिष्य । हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि । चिन्तक तथा दार्शनिक ।

● **सोहनलाल द्विवेदी**
विख्यात राष्ट्रकवि । उदार दृष्टिकोण । अतीत के परिप्रेक्ष्य में नवीन के प्रति सम्मान । अनेक काव्य-ग्रंथों के प्रणेता । अनवरत अध्यवसायी ।

● **सुमित्रानन्दन पंत**

छायावाद के स्तंभ । अनेक काव्य-ग्रन्थो, के सृजेता । प्रकृति के सुकुमार कवि ।

● **डा. गोपाल शर्मा**
सुप्रसिद्ध कवि, लेखक, समीक्षक । हिन्दी निदेशालय मे निदेशक । हिन्दी की सेवा मिशन तथा श्रेष्ठ लेखनलक्ष्य । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबंधित ।

● **चन्द्रदत्त इन्दु**
हिन्दी के सुपरिचित कवि तथा लेखक । बाल-साहित्यमर्मज्ञ तथा पुरस्कृत साहित्यकार ।

● **रवीन्द्र मिश्र**
राजधानी के गम्भीर विषयो पर कलम चलाने वाले वैज्ञानिक कवि ।

● **सत्यमोहन शर्मा**
सुप्रसिद्ध साहित्यकार ।

● **जगदीश चतुर्वेदी**
हिन्दी के श्रेष्ठ कवि । राजकीय पुरस्कार-प्राप्त । 'भाषा' के सम्पादक ।

● **नारायण लाल परमार**
भूतपूर्व सैनिक । सुप्रसिद्ध कवि ।

● **मधुर शास्त्री**
जाने-माने श्रेष्ठ गीतकार । जैसा नाम वैसी रचना ।

- **चन्द्रसेन विराट**
  सुपरचित कवि। अनवरत रूप से लेखन।
- **श्यामलाल 'शमी'**
  जाने-माने गीतकार। सुकुमार भावनाओं के सूक्ष्म प्रेक्षक।
- **राजेन्द्र 'अनुरागी**
  सुप्रसिद्ध कवि तथा चिन्तक।
- **गबरसिंह रावत**
  उदयीमान युवा कवि। 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' से संबंधित।
- **केदारनाथ कोमल**
  नई धारा के सुपरिचित कवि, लेखक तथा समीक्षक।
- **डा. जीवनप्रकाश जोशी**
  हिन्दी साहित्य में पी. एच. डी.। सुप्रसिद्ध कवि, लेखक तथा समीक्षक।
- **डा. उमाशंकर सतीश**
  भाषा वैज्ञानिक। युवा कवि, लेखक तथा समीक्षक।
- **इन्दु जैन**
  हिन्दी जगत की सुप्रसिद्ध कवयित्री। नई कविता में विशेष रुचि। कई विधाओं में साहित्य-सर्जन।
- **पुष्पधन्वा**
  श्रेष्ठ कवि।
- **विनोद शर्मा**
  उदीयमान कवि। कई साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध।
- **रामकुमार 'कृषक'।**
  सुपरिचित युवा कवि। कई प्रबंध-काव्यों के सृजेता। लेखक और पत्रकार।
- **भवानी प्रसाद मिश्र**
  हिन्दी की महान विभूति। लोकप्रिय कवि। कई राजकीय पुरस्कारों से विभूषित। राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक।
- **डा. शेरजंग गर्ग**
  सुप्रसिद्ध युवाकवि, लेखक और समीक्षक। मंच पर भी उतने ही सफल जितने कृतियों में।

● **प्रेमानंद चंदोला**

गंभीर विषयों पर कलम चलाने वाले लेखक तथा सुकवि। विज्ञान के अध्येता पर कविता का मोह।

● **विविक रमेश**

सुकवि।

● **विश्वनाथ मिश्र**

राजधानी के सुपरिचित साहित्यकार। कवि तथा लेखक। संचार मंत्रालय में हिन्दी अधिकारी। कई साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध।

● **पुरुषोत्तम प्रतीक**

नये प्रतीकों के जनक युवा-कवि।

● **विमला दयाल**

सुकवयित्री।

● **जगपालसिंह सरोज**

अच्छे गीतकार। उदीयमान कवि तथा लेखक।

● **लक्ष्मी त्रिपाठी**

सुप्रसिद्ध कवयित्री, लेखिका तथा सम्पादिका।

● **रघुवीर शरण मित्र**

राष्ट्रीय विषयों पर कई काव्य-ग्रन्थ प्रकाशित। मेरठ के सुप्रसिद्ध साहित्यकार।

● **धनंजयसिंह**

सुपरिचित कवि।

● **गुणमाला नवलखा**

हिन्दी कवयित्री।

● **हरिश्चन्द्र पाठक 'अजेय'**

ओजस्वी कवि। कई साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध।

● **सत्यप्रकाश प्रखर**

हिन्दी के सुपरिचित कवि। आंचलिकता की ओर रुचि।

● **मल्लिका**

श्रेष्ठ कवयित्री।

● **राजकुमार सैनी**

नई धारा के सुकवि लेखक तथा समीक्षक। विचार-कविता की ओर रुझान।

(सम्पादक-परिचय:—आवरण पृष्ठ ३ पर)